मासिक—

मानव मन्दिर

सम्पादक : एम. आर. भक्त
पी. एस. ई (रीटार्यड)

वर्ष ५	शनिवार १० मार्च १९७९	संख्या ११

कृतज्ञता

मानव मन्दिर के इस अंक में हज़ूर परम दयाल जी महाराज के दिये हुए तीन सत्संग छप रहे हैं। जब यह सत्संग हम पढ़ कर सुना रहे थे तो उस समय हज़ूर के बड़े पुराने मित्र सरदार पृथपाल सिंह जी उपस्थित थे और सत्संग सुन रहे थे। वह इन सत्संगों से बहुत प्रभावित हुए और उन्होंने इनकी छपवाई के लिये 50 रुपये दिये, हम उनके बहुत अभारी हैं।

प्रकाशक

मानव मन्दिर

संतमत के अधिकारी

सत्संग हजूर परम दयाल जी महाराज मानवता मन्दिर होशियारपुर।

दिनांक 20-11-78

निज बैपारी नाम का हाटै चलु भाई।
साध संत गहकी भये, गुरु हाट लगाई।
सार सबद कछु वस्तु है, सोदा करु भाई।
भाव खुला पंच रंग का, बहु करत दलाली।
जा के हाथ विबेक है, करि देत सवाई।
पाप पुन्न पलरा भये, सूरज भई डाड़ी।
ज्ञान दुसेरी डारि कं, पूरा करि आई।
करि सौदा घर को चले, रोका दरवानी।
लेखा दे निज नाम का, कहं का बैपारी।

पानी सी बानी बही, गुरु छाप दिखाई।
इतना सुन कायल भये, जम सीस नवाई।
संत चले सत लोक, छोड़ा संसारी।
कुन्दन भये दरबार में, प्रभु नजर गुजारी।
कहै कबीर बैठो सही, सिख लेहु हमारी।
काल कलप ब्यापै नहीं, इहै नफा तुम्हारी।

राधास्वामी। मैं अपने आपसे पूछता हूं तू यह काम क्यों करता है? दोस्तो! सात वर्ष की आयु से यह विचार पैदा हुआ था कि मैं राम को मिलूं या याद करूं जैसा कि हिन्दु धर्म में कहा गया है कि नाम जपो। मैंने राम राम करके बहुत मालायें फेरी और विष्णु सहस्र नाम के पाठ किये लेकिन मेरे जीवन का अनुभव बदलता रहा। आखिर एक घटना मेरे सामने आई। मैं राम और कृष्ण का ध्यान किया करता था। मेरे अपने विचार के साथ कृष्ण आगे चला करता था। मैंने कई बार बाँसुरी की आवाज़ भी सुनी। मैं बागां वाले स्टेशन पर ए-एस-एम था। मैं वहां बाहर से स्टेशन पर आया तो मेरे आगे आगे कृष्ण चलता था और पीछे मैं था। वहां गाय का गोबर पड़ा हुआ था। कृष्ण जी

ने कहा कि गोबर खाले। मैंने गोबर उठाया और खा लिया। जब स्टेशन पर आया तो सोचा कि कहीं भागवत या भक्त माल में किसी धर्म वाले ने यह नहीं लिखा किसी इष्ट ने कहा हो कि तू गोबर खाले। मैंने कहा यह जो कृष्ण मेरे आगे फिरता है यह कृष्ण नहीं है। यह विचार है। फिर क्योंकि हिन्दु था, ब्रह्मण के घर पैदा हूआ था, मुझे रामायण से मिला था :-

नाना भान्ति राम अवतार, रामायण शत कोट आपारा।

फिर मैं पुकार करने लगा और रोने लगा। मैं चौवीस घण्टे लगातार रोता रहा। डाक्टरों को बुलाया गया। उन्होंने समझा कि यह पागल हो गया है। रात का एक प्रात: पांच बजे का दृश्य था जिसमें हजूर दाता दयाल महर्षि शिवब्रत लाल जी महाराज प्रकट हुये। उन्होंने यह नाम दिया, अपना पता बताया और कुएं से पानी निकाल कर मुझे नहलाया इतने में उस स्वप्न में से मेरा बाप आ गया उसने मेरी शिकायत की तो मैं रोने लगा। जो कांटे वाला डयूटी पर था उसने मुझे जगा दिया। फिर मैं दाता

दयाल के पास चला गया। उनको राम समझ कर पूजने लगा उन्होंने मेरी सुरत को गुरुमत और नाम की ओर लगाया हम नाम की महिमा रामायण में भी सुना करते थे :-

कली केवल इक नाम आधारा, वेद शास्त्र, श्रुति मत सारा।

दाता ने उस समय नाम दिया. और कहा कि अगर तुम असली राम को मिलना चाहते हो तो सन्तों के मार्ग पर चलो नानक साहिब, दादू, पलटू राधास्वामी और कबीर साहिब के मार्ग पर चलो। जब इनकी बाणियें पढ़ी तो इनमें सबका खण्डन था। कबीर साहिब, स्वामी जी या इन सन्तों ने किसी को नहीं छोड़ा। राम कृष्ण काल के अवतार, वेदान्त सूफीवाद कालमत में तो हृदय घबराता था। उस समय मैंने प्रण किया था कि इस मार्ग पर सच्चा होकर चलूंगा और जो कुछ मुझे मिलेगा वह मैं बता जाऊंगा। मैंने 1905 में नाम लिया और 1916 तक सिवाय रोने और प्रार्थना करने के कुछ न बना उस समय तो मुझे पता नहीं था लेकिन अब पता लगता है, कि इतनी देर क्यों लगी। क्योंकि मेरा

विवाह तेरह साल की आयु में हो गया था और सोलह साल की आयु में मैं गृहस्त में फंस गया। अब मैं समझता हूं कि जो मेरा छोटी आयु का विवाह था उसके कारण मैं अपने अन्तर प्रकाश और शब्द को न पकड़ सका।

मैं 1916 में बसरेबगदाद में लड़ाई में चला गया और बारह साल वहां रहा। मैं अकेला था और भक्ति मार्ग का पैरोकार था, मैंने बड़ी २ रौशनिएं देखी यहां तक कि रात को रज़ाई में से रौशनी में मकान की कडिएं गिन सकता था। मैंने बहुत बीनें और शब्द सुने। यह पुरुषोत्तम दास बैठा हुआ है। यह जलीबा में स्टेशन मास्टर था और मैं तार इन्सपैकटर था मैं जब दौरे पर गया तो इसके स्टेशन पर उतरा। मुझे याद है कि वहां मुझे सारा आसमान ही बीन से भरा हुआ सुनाई पड़ता था। मैं वहां से बारह साल के बाद वापिस आया। दाता ने कहा संतान पैदा करो क्योंकि मेरे संतान नहीं थी। अगर मैं स्त्री के पास केवल संतान पैदा करने के लिए जाता तो और बात थी, मैं तो स्वाद में फंस गया। मैं स्टेशन मास्टर था, जब कभी Staff गलती खाता

था तो मुझे क्रोध आता था। यद्यपि मैंने अनुचित ढंग से पैसा नहीं कमाया मगर मेरे दिल में यह इच्छा रहती थी कि मेरी उन्नति हो जाये। तो मैं दाता दयाल को शिकायत किया करता था कि आपने मुझे फकीर तो बना दिया मगर मुझमें ये अवगुण हैं। सोचा कि भाई! बीन सुनने और रौशनी देखने के बाद भी ये अवगुण मुझसे नहीं गये यद्यपि संतों ने नाम का कितना ढढोंरा पिटवाया हुआ है। तुम नाम लेलो और बीन सुन लो तुम सतलोक पहुंच जाओगे मैं सोचा करता था कि बीन सुनने के बाद मैं कामी हुआ यद्यपि बाहर नहीं गया, क्रोध और लोभ भी आया यद्यपि अनुचित नहीं था तो फिर नाम क्या हुआ ?

मुझे उस असली और सच्चे नाम की समझ आप सत्संगियों ने दी। इसलिये मैं इस आयु में उन्हें सच्चा सत्गुरु मानता हूं जो आदमी मुझे गुरु मानते हैं और मेरा ध्यान करते हैं। आप पूछोगे क्यों ? लोगों के अन्तर मेरा रूप प्रकट होता है जो मेरा ध्यान करते हैं। किसी को दवाई बता जाता है, जिनको सन्तान की इच्छा है उनको संतान दे जाता

है, स्कूल के पर्चे करवाने वाले कहते हैं बाबा ! तू आ गया और Desk के नीचे बैठ गया और विज्ञान का पर्चा Dictate करा दिया । हमें $\frac{98}{100}$ नम्बर आये किसी को डूबते हुये को बचा जाता है लेकिन मैं नहीं होता, न ही मैं कहीं जाता हूं और न ही मुझे पता होता है तो फिर विचार आया कि वह नाम क्या है ? मुझे तो पता ही नहीं होता तो यह विश्वास हो गया कि जो किसी को मिलता है वह उसका अपना ही विश्वास श्रद्धा काम करती है मेरा तो एक सहारा है । मैं तो कुछ नहीं करता । अगर मैं करता होता तो मुझे पता होता । वह उनका अपना ही मन था । आज आपको कबीर साहिब की बानी सुनाता हूं कि नाम क्या है और उसका अधिकारी कौन है ? संसार अन्धेरे में चलता है और उनका भी कोई दोष नहीं क्योंकि उन्हें कोई सच्ची बात नहीं बताता । अगर सच्ची बात बता दी जाये तो दायरा नहीं बनता, सत्संग नहीं होता और न धन आता है । मैं अपने कर्म भोग वश जो कुछ जीवन में अनुभव किया और समझा है कबीर साहिब के शब्द पर मोहर लगाता हूं क्योंकि उनकी बानी सत प्रतीत

होती है जिससे मुझे उत्साह हो गया है कि मैंने जो कुछ नाम के बारे Realize किया है वह ठीक है :-

निज बैपारी नाम का, हाटै चलु भाई।
साध सन्त गहकी भये, गुरु हाट लगाई।
सार सबद कछु वस्तु है, सौदा करु भाई।

आजकल नाम की महिमा है। सब धर्म पंथ नाम देते हैं। आजकल कलियुग में नाम का ज़ोर है। सब नाम ही नाम पुकारते हैं। मुझे कई पत्र आते हैं कि नाम दे दो जी। मैं किसी को क्या नाम दूं। जब मैं बीन सुनने और इतना प्रकाश देखने के बाद फिर भी कामी हुआ, अपने स्वाद के लिए स्त्री के पास गया, कर्मचारियों पर क्रोध आया और अनुचित ढंग से धन नहीं कमाया मगर यह इच्छा अवश्य रही कि मेरी आमदन अधिक हो जाये तो फिर नाम क्या हुआ ? केवल बीन सुन लेना नाम नहीं है। अगर मैं ग़लत हूं तो वर्तमान सन्तमत वाले महात्मा व अन्य धर्म पंथ वाला कोई भी हो, उनको मैं अधिकार देता हूं कि वे मेरा खण्डन करें शर्त यह कि उनकी ज़मीरें साफ हैं और वे अपनी रहनी के

ऊपर चलें। हम लोग गुरु बन जाते हैं। क्या हम अपना कच्चा चिट्ठा किसी को बताते हैं कि हमारे मन के अन्तर क्या कुछ होता है ? कोई नहीं बताता। मैं बताता हूं। कबीर साहिब जो कुछ कहते हैं वह सोलह आने ठीक कहते हैं। वह कहते हैं कि सत्गुरु असली नाम, सार शब्द केवल सन्तों और साधुओं को देता है। मैं संसार और भारतबर्ष में नाम धारियों को आवाज़ दिये जाता हू कि महात्माओ ! गुरुओ !! तुम नाम जपते हो और गुरु बने हुये हो, अपने मन की दशा को Watch करो कि तुम्हारे मन की दशा क्या रहती है। लोगों को भाषण देना आसान काम है। यह हर एक आदमी दे सकता है। यह बानी मेरे अनुभव को सिद्ध करती है कि असली और सच्चे नाम के अधिकारी केवल साधु और संत हैं। साधु कौन है ? जो अपने मन पर कन्ट्रोल कर सकता है, जिसके मन में शक्ति है और जो अपने मन के अन्तर गुरु देवी या किसी का रूप बनाकर ध्यान करता है, वह साधु है और संत वह है जिसके अन्तर प्रकाश पैदा होता है। मैंने बहुत प्रकाश देखे और शब्द सुने हैं। प्रकाश देखने और शब्द सुनने वाले को संत कहते

हैं। त्रिकुटी में रहने वाले को साधु और भंवर गुफा या सतलोक में रहने वाले को संत कहते हैं। मैंने अपनी दशा आपको बताई है। कोई महात्मा अपनी रहनी नहीं बताता और अगर बता भी दे तो संसार उसका अधिकारी नहीं है। मेरे सत्संग से केवल अच्छे समझदार लाभ उठा सकते हैं सर्वसाधारण नहीं उठा सकते मेरा वचन ही नामदान है।

असली नाम वह है जिससे हमारे अन्तर के सब अवगुण निकलकर हम अपनी ज़ात में मिल सकते हैं। वह जो समझ और ज्ञान है उसका नाम सार शब्द, सार नाम या असली नाम है। उसका अधिकारी केवल साधु और संत हो सकता है। साधु और संत को सत्गुरु मिलना चाहिए तब वह नाम जपा जायेगा शर्त यह कि वह उसका अधिकारी है। मुझे वह सार शब्द, नाम तुम सत्संगियों से मिला। दाता दयाल की दया है। जब उन्होंने देखा कि यह इतना मूर्ख है कि इसकी समझ में बात नहीं आती तो उन्होंने 1918 में मुझे यह काम दिया था और कहा था कि तुझमें ननानवे अवगुण हो सकते हैं लेकिन एक सच्चाई प्रिय है। तुझे सच्चा सत्गुरु सत्संगियों के

रूप में मिलेगा और तेरा बेड़ा पार करेगा। इसलिये मैं इस पिछली आयु में आप लोगों का उपकार मानता हूं जिन्होंने मुझे असली और सच्चे नाम का पता दिया। दाता दयाल तो हैं नहीं। कैसे पता लगा? जब मैंने सुना कि मेरा रूप उनकी अर्थात आप लोगों की सहायता करता है और मैं नहीं होता तो मुझे पता लग गया कि मेरे अन्तर जो कुछ भी प्रकट होता था रोशनी, शब्द, गुरु का रूप, देवी देवता और विचार, ये वास्तव में नहीं हैं लेकिन Suggestions and impsessons हैं जो हमारे मस्तिष्क पर पड़े हुये होते हैं। वे फुरते और शक्लें बनाते हैं। जो असली नाम है जिससे कि इन्सान का आवागवन समाप्त होता है, अपने घर चला जाता है और अपनी ज़ात में मिल जाता है जहां से वह आया है, वह केवल साधु और संत को मिल सकता है दूसरे को नहीं मिल सकता। इस वास्ते मैंने अपने आश्रम का नाम मानवता मंदिर या Be man temple रखा है। क्योंकि जब तक इन्सान का आचरण और आदतें ठीक नहीं हैं, वह जीना नहीं जानता और उसका मन उनके वश में नहीं है उसे असली और सच्चा

नाम मिल ही नहीं सकता। क्योंकि मेरे जिम्मे कर्तव्य था :-

तू तो आया नर देही में धर फकीर का भेसा।
दुखी जीव को अंग लगाकर लेजा गुरु के देसा।
तीन ताप से जीव दुखी हैं निबल, अबल अज्ञानी।
तेरा काम दया का भाई नामदान दे दानी।

इसलिए मैं जो मुँह से कहता हूं यही मेरा नाम दान है। मैं लोगों को मकान के अन्तर बैठाकर नाम नहीं जपवाता मगर मैं इसका खण्डन भी नहीं करता, क्योंकि जो प्रथम श्रेणी के हैं उनके लिए ऐसा चाहिए। मैं ऊंचा चला गया। मैं क ख ग नहीं पढ़ा सकता। अब यह मेरी शक्नि में नहीं रहा है जिस प्रकार बड़े बड़े प्रोफैसर P.H D, B.A, M.A, पढ़ाते हैं इस समय मेरी वही Stag है। इसलिये सर्वसाधारण को मुझसे जीने के भेद के सिवाये नाम का लाभ नहीं पहूंच सकता :-

निज बैबारी नाम का, हाटै चलु भाई।
साध संत गहकी भये, गुरु हाट लगाई।
सार सब्द कछु वस्तु है, सौदा करू भाई।

कबीर साहिब ने बहुत जगह सार शब्द या सार नाम का वर्णन किया है। अब मुझे क्या हो गया ? जो मैं घण्टा, संख, ओं की धुन, रारंग सारंग या बीन सुनता था वह क्या निकला ? वह सार शब्द नहीं है। अगर वह सार शब्द होता तो मैं घर में आकर कामी कैसे होता, मुझे क्रोध क्यों आता, मैं यह इच्छा क्यों करता कि मेरी उन्नति हो जाये यद्यपि मैंने अनुचित ढंग से धन नहीं कमाया। यह एक प्रश्न है जो मैं अपनी आत्मा से करता हूं मुझे उस सार शब्द का पता तुम लोगों ने दिया। कैसे ? जब से मुझे पता लगा कि मेरा रूप लोगों के अन्तर जाता है लेकिन मैं नहीं होता तो मुझे सिद्ध हो गया कि जो कुछ भी मेरे अन्तर फुरता है चाहे वह दाता दयाल, राम या कृष्ण या और कुछ है, वह माया अर्थात बुद्धि का काम है। जहां नाम है वहां न माया और न ब्रह्म है। ब्रह्म क्या है ? ब्रह का अर्थ बढ़ना और म का अर्थ मनन करना है संसार में वह कौन सी चीज़ है ? रोशनी हर जगह फैली हुई है। हर एक चीज़ में रोशनी है और रोशनी ही ब्रह्म है। जब मुझे यह ज्ञान हुआ तब सार

शब्द का पता लगा वह सार शब्द क्या है ? अब जब मैं अभ्यास करता हूं तो मन के सारे विचार छोड़ जाता हूं। मेरे सामने कोई रूप नहीं आता। केवल प्रकाश और शब्द होता है, प्रकाश को देखने और शब्द को सुनने वाली कोई और चीज़ है प्रकाश और है और शब्द और है। मैं उस चीज़ की तलाश करता हूं जो प्रकाश को देखती और शब्द को सुनती है। जब कभी दूसरे, तीसरे या चौथे महीने या दूसरे दिन उसकी तलाश में जाता हूं तो फिर मुझे क्या होता है ? मुझे सार शब्द मिल जाता हूं। सार शब्द क्या हुआ ? जहां न मैं, न तू, न गुरु और न चेला है। यही संतों की अपनी (Research) का परिणाम है। जहां स्वामी जी चेत महीने में सारे दर्जे बताते हैं वहां आखिर में क्या कहते हैं ?

नहीं वहां सतनाम न नाम न अनामी।

अगर हम सदा के लिए अपने मालिक में उसका रूप होना चाहते हैं तो हमें कहां जाना पड़ेगा ? जहां न सत है, न नाम है और न अनामी है। मैं

समझता हूं कि मैं बहुता ऊंचा सत्संग दे रहा हूं और मैं जान बूझकर दे रहा हूं। किस लिए ? क्योंकि इस समय हम गृहस्थियों को नाम की आड़ में मूर्ख बनाकर लूटा जा रहा है। अगर किसी का रूप किसी के अन्तर प्रकट हो गया तो उसने समझ लिया कि बाबा फकीर आया, उसे कोई बात कह दी और दवाई बता दी। वह आकर धन दे गया और मेरी सेवा कर दी। यह बिल्कुल झूठ है। यही एक परदा है जिसके अन्तर मानव जाति हज़ारों भिन्न भिन्न पथों, धर्मों में बट गई और हमारे सिर फटे। पाकिस्तान में क्या हुआ ? अब भी देश में धर्म के आधार पर झगड़े हो रहे हैं। ऐसा क्यों होता है ? क्योंकि लोगों ने गुरु के रूप को नहीं समझा। गुरुमत का अभाव है और जो गुरुमत है भी, यह गुरुमत नहीं हैं यह कालमत है। मैं इसमें इतना दोष गुरुओं का नहीं समझता जितना संसार वालों का है। आप लोग संसार के पिछे फिरते हैं। किसी को कुछ चाहिए और किसी को कुछ। हमें तुम्हें जो कुछ मिलना है यह हमारे कर्मों का फल है। जो गुरु दो दो, तीन-तीन साल स्वयं बीमार हो जाता है तुम उससे यह

आशा करते हो कि वह तुम्हें स्वस्थ कर देगा, यह कैसे हो सकता है।

सर्वसाधारण के लिए नाम नहीं है। इसलिए मैं किसी को नाम नहीं देता। सर्वसाधारण के लिए पहले मन पर कन्ट्रोल चाहिए। जब तक मन पर कन्ट्रोल नहीं है तुम लाख कोशिश करो तुम नाम नहीं जप सकते।

जहां काम तहां नाम नहीं जहां नाम नहीं काम।
रवी रजनी दोनों न मिलें एक ठौर एक याम।

अब आप पचास पचास, साठ साठ साल के हो गये हैं। आपके नौजवान लड़के हैं फिर भी हम विषय विकार नहीं छोड़ते और आशा करते हैं कि हमें नाम और शान्ति मिल जाये और हम अपने घर चले जायें, यह नहीं हो सकता। वहां तो वह जाता है जिसे यह ज्ञान हो जाता है कि मेरे अन्तर जो कुछ फुरना फुरती है यह है नहीं केवल माया और कल्पित है। मुझे जब यह विश्वास हुआ तो अब मैं क्या करता हूं? अब मैं प्रकाश और शब्द में जाता हूं। वहां यह कोशिश करता हूं कि उस चीज़ की

ओर जाऊं जो प्रकाश को देखती और शब्द को सुनती है। वह चीज़ मालिक को अंश है। उसका नाम सुरत है जो उसमें से पैदा होती है। वह नाम है। असली और सच्चा नाम जो उसके साथ मिलाता है वह सार शब्द है। वह न बीन, न ओं, न मृदंग, न घण्टा, न संख और न कुछ और है। वह कब आयेगा ? जब तक इन्सान को यह विश्वास नहीं हो जाता कि जो कुछ मेरे अन्तर फुरता है यह माया और कल्पित है। यह बिल्कुल साफ और सच्ची बात है। तभी तो कहा है।

नाटक कोटन में कीऊ नारायण जिन चीत।

ऐसा कोई कोई आदमी होता है। सर्वसाधारण के लिए मानवता की शिक्षा है कि पहले मानव बनो। जीवन के आश्रम हैं। बच्चा पैदा होता है फिर जवान होता है। ऋषियों ने कहा हुआ है कि पच्चीस साल से पहले विवाह मत कराओ। भई क्यों ? खून की चालीस बून्दों से एक बून्द ओजस की बनती है और ओजस की चालीस बून्दों से एक बून्द वीर्य की बनती है। जिन आदमियों और लड़कों का वीर्य

छोटी आयु में ग़लत कर्मों से नष्ट हो जाता है उनके भाग्य में अशान्ति और रोना अनिवार्य है। उन्हें डाक्टर या मेरे जैसे महात्मा लूटेंगे। मन की चंचलताई क्यों अधिक होती है ? मन के चंचल होने के तीन चार कारण हैं। पहला कारण स्वस्थ्य का ठीक होना है अर्थात Ill health होना। स्वस्थ्य के के न ठीक होने के और भी कारण हैं मगर सबसे अधिक कारण विषय विकार है जिससे जवानी में कोई न कोई रोग होना ज़रूरी है। दूसरा कारण आर्थिक कठिनाई अर्थात पैसे की कमी, तीसरा कारण किसी का अनुचित दबाओ और चौथा कारण अज्ञान है। हमारी अशान्ति के यह चार कारण हैं। इसलिए मैं कहता हूं कि अपने २ बच्चों के चरित्र Character का पूर्ण ध्यान रखो। यह मां बाप का कर्तव्य है। मैंने अपने लड़के को नाम नहीं दिया लेकिन उसके चरित्र को बनाया। इस समय वह बड़ा भारी ओफिसर है। मैंने उसे कभी नहीं कहा कि तू बैठकर राधास्वामी जपा कर। पहले मानव बनो। प्रारम्भ में सबसे आवश्यक बात क्या है ? कि मानव अपने शारीरिक और मानसिक ब्रह्मचर्य का पालन करे

यह नहीं कि विवाह ही न कराये। यह मेरा भाव नहीं है। मेरे दुखों का क्या कारण था ? छोटी आयु का विवाह। मेरा बाप बड़ा कठोर हृदय वाला था। मैं ज़रा भर भी ग़लती खाता था तो वह तुरन्त थप्पड़ मारते थे। मैं हर समय सहमा हुआ रहता था। इन्हीं कारणों से मैं ईश्वर की ओर आया और वह धन्य था :-

दुख दारू सुख रोग भया।

मुझे ये दुख थे इसलिए मैं इस ओर आया और मेरा जीवन बन गया। मैं क्या कहना चाहता हूं ? असली नाम सब के लिए नहीं है, जब तक मानव पहले मानव न बने। तुम्हारे अन्तर जो कुछ अभ्यास में आता है वह बताता हूं।

भाव खुला पंच रंग का, बहु करत दलाली।
जा के हाथ बिबेक है, करि देत सवाई।

वह कहते हैं कि जो आप अपने अन्तर अभ्यास में शक्लें, रंग, यह और वह देखते हैं, ये क्या करते हैं ? जिन का यह खुल जाता है वे दलाली का काम करते हैं। दलाल कौन होता है ? जो लेने और देने वालों को आपिस में मिला देता है। दलाल का यही काम

है और तो कुछ नहीं। जो आदमी अपने अन्तर साधन अभ्यास करता है, रंग रूप गुरु की शक्ल या मृदंग सुनता है, उससे क्या लाभ होता है ? वह दलाली का काम करता है। वे Self को उस बड़े Self से मिला देते हैं जो दलाली करते हैं। मगर वे दलाली कब करेंगे ? जब वे समझ बूझकर और विवेक से अभ्यास करते हों तब। इस वास्ते गुरु धारण किया जाता है। गुरु धारण करने का भाव यह नहीं है कि तुम गुरु को सिर पर बैठा लो। तुम भूल में हो। गुरु धारण करने का भाव यह है कि गुरु के सत्संग में जाकर उसकी बात को सुनो समझो और उसपर अमल करो। उसका नाम विवेक है और यही सुखमणी साहिब में लिखा है।

सतपुरुष जिन विवेकिया सतगुरु तिस का नाम।
ताके संग शिष्य उभरे नानक हरी गुण गाव।

उसकी सेवा करो। आखिर वह कहते है कि सतपुरुष क्या है ? संसार वालों ने सतपुरुष को नहीं समझा। वे शब्दों के जाल में फंसे हुये हैं। सुखमनी साहिब में साफ लिखा है :-

जिव्वा एक अस्तुती अनेक, सतपुरुष है पूर्ण विवेक ।

विवेक कब मिलेगा ? जब तुम किसी संत या किसी महापुरुष के सत्संग में जाओगे और उसकी सेवा करोगे । संसार वालों ने यह समझा हुआ है कि सेवा केवल रुपया देना है । दीवानो ! अगर रुपया देने से कोई सतलोक पहुंच सकता तो ये बड़े २ धनी लोग रुपया देकर वहां पहुंच जाते । यह रुपया देने का का काम नहीं है और न ही किसी भी प्रकार की संसारी High Qualification का काम है । यह बिल्कुल ग़लत है । यहां गुरु की सेवा करनी पड़ती है । आप लोगों ने गुरु की सेवा को नहीं समझा है । आपने यही समझा हुआ है कि बाबा फकीर आया: इसे पांच छः सवजिएं बनाकर खाना खिला दिया, कपड़े बुनियानें पहना दी, पैसे दे दिये । यह ग़लत है । जो कुछ तुम दोगे वह मिलेगा । यह संसार का व्यवहार है । इससे परमार्थ का कोई सम्बन्ध नहीं । क्या मेरे मंदिर के चार कमरे बनाने या किसी दूसरे जगह का डेरा, मकान या महल बना देने से तुम सतलोक पहुंच जाओगे ? बिल्कुल ग़लत है । गुरु की असली सेवा है :-

दर्शन करे बचन पुनि सुने सुन सुन कर नित मन में गुने।
गुन गुन काढ़ ले तिस सारा, काढ़ सार तिस करे आहारा।
कर आहार पुष्ट हुआ भाई, जग भव भय सब गई गंवाई।

यह बाहर का देना केवल प्रमाण है कि आदमी को उस चीज़ की आवश्यकता है। जब वह सत्संग में जाता है तो खाली हाथ नहीं जाता। यह दस्तूर है कि बच्चों वाले घर, महापुरुष और ओफिसर के पास खाली हाथ नहीं जाना चाहिए। जो खाली हाथ जाते हैं वे खाली हाथ आते हैं, हमारी सभ्यता देखो, ऋषि लोग जंगल में रहते थे। जब वह राजाओं के पास जाते थे तो यज्ञ करने की समेधा ले जाते थे क्योंकि उनके पास धन नहीं होता था। किसी समय यज्ञोपवीत ले जाते थे। बच्चों के पास कभी खाली हाथ मत जाओ तब वे तुम्हारी ओर ध्यान देंगे। अगर किसी ने सच्चे संत के दर्शन करने हों तो छः महीने या एक साल के बच्चे के दर्शन करो। जो बच्चे के मन की दशा होती है वही एक सच्चे संत के मन की होनी

चाहिए । उसे न किसी से राग द्वेष है, न विरोध है और न वह खुदा राम या कृष्ण को याद करता है। अब मैं किसी को याद नहीं करता। मैं अब नाम नहीं जपता लेकिन नाम मुझे जपता है :-

माला फेरूं न हर भजुं, मुख से कहं न राम।
मेरा राम मुझे जपे तब पाऊं विश्राम।

नाम तो मैं पहले भी जपता था मगर भ्रम में था। मुझे यह पता नहीं था कि राम हर समय मुझे जपता है। राम मुझे कैसे जपता है ? राम प्रकाश और शब्द है। वह तो हर समय मेरे अन्तर था। जब मैं पैदा हुआ था तो भी अन्तर में था। जब तक मैं जीवित हूं तब तक मेरे अन्तर रहेगा। वह तो हर समय मुझे जपता था और मेरे साथ रहता था मगर मुझे पता नहीं था। यह पता बाहर का गुरु देता है। इसलिए मैंने अपने आपको Publically प्रकट किया है कि मैं समय का संत सत्गुरु हूं। ऐसा कहने से मुझ में कोई विशेषता नहीं आ गई कोई दुम और सींग नहीं लग गये। सत्गुरु नाम सच्चे ज्ञान का है। मैं आप लोगों को सच्ची बात कहता हूं :-

भाव खुला पंच रंग का, बहु करत दलाली।
जा के हाथ बिबेक है, करि देत सवाई।

पचरंगी फुलवाड़ी, अर्थात सहस दल कंवल, त्रिकुटी, सुन्न महासुन्न और भंवर गुफा क्या है ? जिस प्रकार का तुम्हारा मन है उसी प्रकार के दृश्य तुम्हें अन्तर दिखाई देगें। तुम्हें जैसे संस्कार पड़े हुये हैं और जैसे तुम्हारे विचार हैं वैसे तुम्हारे अन्तर पैदा होगें समझ बूझ के साथ अभ्यास करो। लेकिन हम बाणियों को पढ़कर अभ्यास करते हैं। तुम्हारे अन्तर जिस प्रकार की प्रकृति है, जिन जिन सियारों से तुम्हारा मस्तिष्क बना है शनि, राहु, सूर्य और चन्द्रमा जिस जिस स्थान पर पड़े हैं उसके अनुसार तुम्हारे अन्तर विचार पैदा होंगे। उससे अलग नहीं हो सकते। जिन ग्रहों में मानव पैदा हुआ है। जिसको सूर्य, बुद्ध या वृहस्पति नौवें या पाचवें में हैं और लगन में हैं वे अपने अन्तर प्रकाश देख सकते हैं। जिन्हें ऐसी गति नहीं आई हुई है वे कभी नहीं देख सकते। क्यों ? क्योंकि उनका समय नहीं है। यह चीज़ हर एक आदमी के भाग में नहीं आती मगर सब अन्तिम अवस्था पर पहुंच सकते हैं। आप

मेरे भाव को समझ गये होंगे। जिस जिस प्रकार के तुम्हारे भाव और विचार हैं जो तुमने किताबों से पढ़े हैं या तुम्हारे मां बाप के संस्कार हैं, वे आयेंगे।

मैं स्त्रियों को साफ़ कहना चाहता हूं कि तुम ही अपनी संतान को बनाने वाली हो, दूसरा कोई नहीं। मां के जिस प्रकार के विचार होंगे वे बच्चे पर जायेंगे जब वह पेट में होगा। जैसे मैं अभिमन्यु का उदाहरण दिया करता हूं। जब अभिमन्यु अपनी मां अर्थात अर्जुन की स्त्री के पेट में था तो अर्जुन अपनी स्त्री को चक्कर व्यूह बींधने का वर्णन बता रहा था। उस समय तक तो वह जागती रही लेकिन जब उसने इससे निकलने का वर्णन किया तो वह सो गई। अभिमन्यु ने चक्कर बींधना सीख लिया।

मैं आप लोगों को कुछ कहना चाहता हूं। मेरे सत्संग में मातायें और लड़किएं आती हैं। मुझसे कुछ ले जाओ। गंगा वह रही है अगर नहाना धोना नहीं तो कम-से-कम ठण्ड हवा ही ले जाओ। जिस प्रकार के संस्कार तुम्हारे मन के अन्तर होते हैं वे बच्चा ग्रहण करता रहता है। एक उदाहरण मैंने

अभिमन्यु का दिया दूसरा अकबर का देता हूं। हुमायूं शत्रु से डरा हुआ भाग कर जंगल में छुपा था। अकबर उसकी बेगम के पेट में था। जब बेग़म जंगल में अकेली बैठी हुई थी तो अपने पाव या ज़मीन पर नक्शा बना रही थी। उधर से हुमायूं निकला और पूछने लगा कि बेगम ! तू क्या करती है। उसने कहा कि मेरे घर जो लड़का पैदा हो वह इतने देश का राजा हो जितना कि मैं नक्शा खींच रही हूं। यह उसकी इच्छा थी।

मैं आपको अपना उदाहरण देता हूं। मैं एक सिपाही का लड़का हूं मेरे पिता रेलवे पुलिस में कांस्टेबल थे। उसके घर बारह: साल तक कोई संतान नहीं हुई। मैं पहला लड़का हूं। मेरी मां मुझे कहा करती थी बच्चा ! मैं स्टेशनों पर स्टेशनमास्टरों को झंडियां हिलाते देखा करती थी। जब D.T.S. की गाड़ी आती तो काट देते। मेरी इच्छा थी कि मेरा भी कोई लड़का हो, वह स्टेशनमास्टर बने और उस की गाड़ी भी कटे। उसकी इच्छा का यह परिणाम निकला कि मैं स्टेशनमास्टर बन गया और मेरा छोटा भाई ट्रैफिक मैनेजर रेलवेज़ हुआ और

गाड़ियों में घूमा। ऊंची बात को तो आप समझ नहीं सकते। जिस बात को तुम समझ सकते हो, वह यह है कि अच्छी संतान पैदा करो। तुम मातायें Nation को बनाने वाली हो। अगर यह लीडर बना सकते होते तो महात्मा गांधी बना जाता। उनका स्वराज्य का स्वप्न कहां गया ? क्या देश में स्वराज्य आया हुआ है ? यहां तो नर्क राज्य आया हुआ है। यहां कहां स्वराज्य है। क्यों ? क्योंकि यह माताओं का या हमारा दोष है। हम शराब पी कर कामके जज़्बे में स्त्रियों के पास जाते हैं और बच्चे ठहर जाते हैं। उन बच्चों से तुम यह आशा करो कि वे देश के लिए लाभदायक सिद्ध होंगे ऐसा नहीं हो सकता क्योंकि तुम Out of control होकर स्त्रियों के पास जाते हो। आजकल देखते हो कि एसम्बलियों में क्या हो रहा है। क्या किसी में कंट्रोल है ? एक दूसरे के विरुद्ध कीचड़ उछाल रहा है। ऐसा क्यों है ? क्योंकि यह माताओं का दोष है बच्चों का नहीं। अगर अभिमन्यु मां के पेट में चक्करव्यू बींधना सीख सकता था और मां के भावों अनुसार मैं स्टेशन मास्टर और मेरा भाई ट्रैफिक मैनेजर हो सकता है तो बाकी

बच्चों पर मां बाप का क्यों प्रभाव नहीं पड़ेगा ? अवश्य पड़ता है । जब चार महीने के बाद बच्चा मां के पेट में होता है तो स्त्री पुरुष भोग करते रहते हैं । मां कामातुर होती है तो तुम कैसे आशा कर सकते हो कि जो बच्चा पैदा होगा चाहे लड़की या लड़का हो वह समय से पहले वह कामी न होगा । कामी होगा, कोई रोक नहीं सकता । यह विज्ञान है ।

अगर मैंने वही काम करना होता जो दूसरे महात्मा करते हैं तो मुझे नई दुकान खोलने की आवश्यकता नहीं थी । कोई संत महात्मा ऐसी शिक्षा नहीं देता । क्योंकि सच्ची बात बताने से कोई लाभ नहीं होता । मैंने संतान के बिचार से केवल एक लड़का पैदा किया है वरना मैं भी आपकी तरह दोषी हूं । मैंने भी खुदरौ सन्तान पैदा की है मगर उस समय मुझे पता नहीं था । मालिक ने मुझ पर दया की कि मेरी खुदरौ सन्तान मर गई । अगर आज हमारी संतान खराब है तो हम खराब हैं और हमारी ग़लती हैं संतान का कोई दोष नहीं तुम जिस प्रकार का बीज बोओगे वैसा फल आयेगा । अगर गेहूं का दाना खराब है तो उसका पौदा भी वैसा ही पैदा होगा । ऐसे ही हमारे और माताओं के विचार बच्चे

पर प्रभाव डालते हैं। जब बच्चा पेट में हो तो अच्छे विचार रखो। मैं स्त्रियों का गुरु इसी वास्ते स्त्री बना रहा हूं कि वह उन्हें समझा सकेगी दूसरे धन, कपड़े ले जायेगी लेकिन सत तो नहीं ले जायेगी। मैं इसके विरुद्ध हूं कि स्त्रियें संतों महात्माओं के पांव दबाती फिरें। यह ग़लत है। जैसे तुम हो और तुम्हारे विचार हैं। वैसे तुम्हारे बच्चे होंगे। जिस घर में कलह: क्लेश है और स्त्री पुरुष की नहीं बनती, वहां बच्चे तो पैदा हो जायेंगे मगर पति पत्नि के दिल एक न होने के कारण बच्चे मंगलीक पैदा होंगे।

स्त्री पुरुष जिस प्रकार के विचार रखेंगे वैसे बच्चे पैदा होंगे मैं आपको समाचार पत्र की एक सच्ची बात बताता हूं। एक अंग्रेज़ के घर लड़का पैदा हुआ। वह हबशी की शक्ल का था। अंग्रेज़ ने अपनी स्त्री पर दाबा कर दिया कि यह मेरा लड़का नहीं है, किसी और का है। स्त्री कहने लगी यह मेरे पति का लड़का है। उनका खून मिलाया गया। खून ठीक बाप के साथ मिल गया अब जज विपत्ति में पड़ गया कि क्या निर्णय करे। जज समझदार था। वह उसके मकान पर गया। वह उस कमरे में चला

गया जहां वह स्त्री रहती थी। उसने उस कमरे में हबशी की फोटो देखी जिसे वह स्त्री देखती रहती थी। जब बच्चा पेट में था तो वह उस फोटो को देखती रहती थी। इसलिए उस लड़के की शक्ल हबशी जैसी हो गई। मैं वह शिक्षा देना चाहता हूं जिससे तुम लोगों के जीवन बदल जायें। तुम्हारी अच्छी सन्तान पैदा हो। तुम्हारा दीन, और दुनियां भी बने और तुम्हें मुक्ति भी मिल जाये।

आपने देखा होगा कि मेरा और मेरी लड़कियों का रंग गोरा है मगर पदम का रंग सांवला है? आपको मैं भेद की बातें बताता हूं। मेरी स्त्री मासिक धर्म के बाद नहाई। जब नहाकर बाहर निकली तो उसने कालू को देखा जिसका रंग बिल्कुल काला था। उसे मैंने अपने घर किसी काम के लिए भेजा था। वह मेरे पास काटें वाला था। जब मैं शाम को घर गया तो मेरी स्त्री मेरे गले पड़ गई कि आपने काले कटोरे को भेज दिया। जब मैं नहाकर हटी तो वह सामने आ गया। उसके संस्कार से उसके रंग में परिवर्तन आया। माताओ बहनो !!! भाईयो !!! बजुरगो !!! मैं तुम्हें वे बातें बता रहा हूं अगर

तुम उन पर अमल करोगे तो तुम्हारा भला होगा। मैं आपको जीवन व्यतीत करने का मार्ग बताता हूं। हम दुखी क्यों हैं ? कोई स्त्री, कोई भाई और कोई लड़के से दुखी है। इसका जिम्मेवार कौन है ? अज्ञान। हमें किसी ने सच्चाई नहीं बताई। मुझे स्वयं खेद है कि मेरे बाप ने कोई उपदेश नहीं दिया। हमने जो ग़लत काम सीखे वे अपने साथियों से सीखे हमें उस समय क्या पता था। अब तो मैं निर्लज्ज हो गया हूं। मैं सबको कह देता हूं कि मातायें अपनी लड़कियों को सारी बात समझायें और बाप अपने लड़कों को समझायें। अगर वे न समझें तो अनके सिर से जिम्मेदारी (Duty) तो समाप्त हो गई। यहां नौजवान बैठे हैं, तुम अपने आपसे पूछो कि तुम क्या करते हो ? तुमने बचपन में कितनी ग़लतियें खाई हैं। जब बड़े हो जाते हो तो फिर डाक्टरों के पास दौड़ते फिरते हो। मेरी बात से बुरा न मनाना।

साधु ऐसा चाहिए, सच्ची कहे बनाये।

मैं इस बात की चिन्ता नहीं करता कि तुम अवश्य ही मेरे सत्संग में आओ। आपकी इच्छा करे

सत्संग में आओ अगर न करे तो मत आओ। आपकी इच्छा करे तो मेरी कोई किताब पढ़ो अगर न करे तो मत पढ़ो ? मेरे जिम्मे तो दाता दयाल ने कर्तव्य लगाया था कि शिक्षा को बदल जाना मैं सच्चाई के साथ बदल चला मगर यह दावा नहीं करता कि जो कुछ मैं कहता हूं यही Final है। मेरे जैसे संसार में बहुत फकीर आये और अपनी अपनी बाणी कह कर चले गये। संसार वैसे का वैसा ही है जिनके भाग्य में है वे बात को समझ कर अपना जन्म बना लेते हैं जिनके भाग्य में नहीं वे न बनायें। मैं सच्ची बात कहता हूं।

भाव खुला पंच रंग का, बहु करत दलाली।
जा के हाथ विबेक है, करि देत सवाई।

तुम लाख नाम जपते रहो, अगर तुम्हारे मन के विचार शुद्ध नहीं हैं तो वह नाम तुम्हें खा जायेगा तुम नाम जपते और सुमिरन ध्यान करते हो। उससे क्या होता है ? तुम्हारी Will Power बढ़ जाती है। मुझे यह अनुभव हुआ है। जिनका ध्यान बन जाता है उनके काम हो जाते हैं और उसका Credit His

Holiness Pt. Faqir Chand Ji Maharaj को मिलता है। यद्यपि फकीर चन्द ने कुछ नहीं किया। तुम्हें जो कुछ मिलना है तुम्हारे विचार की शक्ति से मिलना है। किसी बाहर के गुरु या राम ने आकर तुम्हारी सहायता नहीं करनी है। तुम भूल में हो और उसी भूल में आकर मानव जाति नाना धर्मों में बट गई तुम्हारे ध्यान की शक्ति है। जिस प्रकार मिसमरेज़म वाला पहले काला निशान बना लेता है। उसे देखता रहता है मगर आंख नहीं झपकता। जब उसे फूल दिखाई देता है तो उसमें शक्ति आ जाती है। जो कुछ है तुम्हारा अपना ही विचार है भाव तो केवल मन को ठहराने से है कि तुम्हारे मन की चंचलताई दूर हो जाये। मेरा मन महाचंचल था। दाता ने मुझे एक तम्बूरा दे दिया और चार तारों में सुर करना बता दिया। उन्होंने इस प्रकार मेरे मन का इलाज किया। मेरा मन चंचल तो होना ही था क्योंकि मेरा विवाह तेरह साल की आयु में हो गया था और सोलह साल की आयु में गृहस्थ में फ़ंस गया था। गुरु किसी की प्रकृति को Study करके अच्छी प्रकार जानता है कि उसके मन के अन्तर क्या

है और उसका इलाज कैसे किया जाये। इसलिए कहा गया है कि अपने मन का सारा हाल गुरु को बता देना चाहिए।

पाप पुन्न पलरा भये, सूरत भई डांडी।
ज्ञान दुसेरी डारि कै, पुरा करु आई।

पाप पुन्य तराज़ू के दो पलड़े हैं और सुरत डन्डी है। उनको बराबर करने के लिए ज्ञान का दोसेरा डाल। इन संतों ने ऐसी बाणी कही है कि कोई समझ न सके। पाप और पुन्य क्या है? तुम्हारे अपने मन के विचार ही पाप पुन्य हैं। तुम एक चीज़ को पाप समझते हो उसका प्रभाव पाप का होगा। जिसे तुम पुन्य समझते हो उसका प्रभाव पुन्य होगा। पाप पुन्य समय अनुसार बदलते रहते हैं। पहले ज़माने में हिन्दुओं में एक राजा होता था। उसे ईश्वर का रूप समझते थे और उसका मान और आज्ञा ऐसी मानी जाती थी जैसे परमात्मा की आज्ञा हो। मगर अब क्या है ? अब राजाओं अर्थात प्रधान मन्त्रीयों के पुतले जलाये जाते हैं और उनकी फोटो को पीटा जाता है। अब इसे पसन्द करते हैं उसे पसन्द नहीं करते। पाप

पुन्य विचार का है। वह कहते हैं इससे ज्ञान के दोसेरे से पूरा करो। वह ज्ञान क्या है? मुझे वह ज्ञान तुम लोगों से मिला। जब से मुझे यह विश्वास हो गया कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता तो मुझे पता लग गया कि मेरे अन्तर जो कुछ फुरना फुरती है, यह है नहीं केवल कल्पना और माया है। क्योंकि यह कल्पना है इसलिए मैं इसमें नहीं फंसता। मेरे पास पाप पुन्य की कोई Value नहीं है मगर मैं मरयादा को नहीं तोड़ता। मैं जानता हूं कि पाप पुन्य कुछ नहीं वरना आगे आने वाले भी मरयादा तोड़ेंगे। कृष्ण जी ने भी अर्जुन को यही कहा है। तो मैं ज्ञान को यह समझता हूं। मैं आप सत्संगियों का इतना उपकार मानता हूं जितना कि शायद दाता दयाल का भी नहीं मानता हूं। दाता दयाल की दया है। उन्होंने यह काम इसीलिए दिया था कि जो कुछ मैं चाहता था वह मुझे मिल जाये, समझ आ जाये और सच्चाई का पता लग जाये। आप लोग मेरे सत्गुरु हैं जिन्होंने आकर मुझे अपना अनुभव बताया।

करि सौदा घर को चले रोका दरवानी।

वह कहते हैं कि यह नाम का सौदा करके जब मरने लगे तो दरबान ने रोक लिया। वह दरबान कौन था ? वह तुम्हारा मन था।

लेखा दे निज नाम का कहं का बैपारी।

जब आदमी मरते समय अन्तर जाता है तो मन उसके साथ होता है। जो कुछ उसने किया हुआ होता है वह उसके सामने आता है। क्योंकि उसने निजनाम को प्राप्त किया हुआ है कि यह सब कल्पना और माया है फिर क्या होता है।

पानी सी बानी बही, गुरु छाप दिखाई।
इतना सुन कायल भये, जम सीस नवाई।

जब आदमी मरने लगता है तो उसके सामने शक्लें रूप या कोई विचार आता है। क्योंकि उसने समझा हुआ है कि यह सब माया है वह उन शक्लों और रूपों की ओर नहीं खिचेगा क्योंकि गुरु का ज्ञान उसके सामने आयेगा कि यमराज आदि कुछ नहीं वे सब भाग जायेंगे। मैंने ऐसा समझा है मगर मैं यह दावा नहीं करता कि जो कुछ मैं कहता हूं यही ठीक है। मुझे पता नहीं कि कबीर का क्या ज्ञान है। अगर कबीर साहिब होते तो उनसे पूछता कि आपने

इतनी बाणी रच दी लेकिन केवल स्मस्याएं ही लिख कर गये ।

सन्त चले सतलोक को, छोड़ा संसारी ।

किस संसार को छोड़ोगे ? संसार सम और सार को कहते हैं। सम का अर्थ बराबर है। जो हमारे अन्तर असली वस्तु सार है उसके सामने जो कुछ आता है शक्लें रंग रूप वह संसार है। सार हम और तुम हो। तुम कोन हो ? जो चीज़ तुम्हारे अन्तर प्रकाश को देखती और शब्द को सुनती है वह सार है। उसके सामने जो कुछ भी आता है वह संसार है जब तक यह संसार नहीं छूटेगा कोई आदमी भी इस माया और काल के चक्कर से नहीं निकल सकता। मेरा अपना पता नहीं कि मेरा क्या परिणाम हो मगर इस समय मुझे खुशी है कि मैंने इस भेद को समझ लिया है। यद्यपि अब भी मेरा यह संसार है। मैं इस समय सत्संग करा रहा हूं, यह माया नहीं तो और क्या है। मगर मैं इसमें फंसता नहीं। जब तक जीवन है संसार में रहो। तुम संसार से नहीं बच सकते हो न माया से दूर जा सकते हो। संसार से भागकर कहां जाओगे ? जब तक तुम्हारा मन है

कुछ न कुछ सोचता रहेगा मगर इसके रूप को समझ कर इसमें न फंसना ही सार भेद है, यही जीवन्मुक्त अवस्था है और यही सारे धर्मों का परिणाम है।

कुन्दन भये दरबार में, प्रभु नजर गुजारी।
कहैं कबीर बैठो सही, सिख लेहु हमारी।
काल कलप ब्यापै नहीं, इहै नफा तुम्हारी।

कबीर कह रहे हैं कि भाई! मेरी नसीहत को मानो। तुम्हें नाम का यही लाभ होगा कि तुम्हें काल कर्म नहीं व्यापेगा। काल समय को कहते हैं। समय का प्रभाव. तुम्हारे विचार भाव तुम्हें नहीं फंसायेगें बल्कि पार ले जायेंगे। मैंने आपको बहुत कुछ बता दिया, कोई कसर नहीं छोड़ी। संसार के रूपको समझकर इसमें न फंसना ही सार है। यह मेरा कर्म भोग है। जो कुछ मेरी समझ में आया और मैंने जीवन में सीखा, वह बता दिया। दूसरे मैं शुभ भावना देता हूं कि जिस जिस इच्छा को लेकर तुम आते हो वह पूरी हो।

मैंने प्रण किया था कि इस मार्ग पर चलूंगा जो कुछ मेरी समझ में आयेगा बता जाऊंगा। मैंने

किसी पर उपकार नहीं किया मेरा कर्म था, मैं भोगता हूं। मगर यह दावा नहीं करता कि जो कुछ मैंने कहा है यही ठीक है। मेरा कर्तव्य था, मैंने पूरा किया। मैं इस काम से सुखी नहीं हूं। मैं आपको सच कहता हूं और बड़े हित से कह रहा हूं। मगर मेरा कर्म है दूसरे दाता दयाल की आज्ञा है कि शिक्षा को बदल जाना।

सब को राधास्वामी

सत्संग परम दयाल जी महाराज मानवता मन्दिर होशियारपुर।

दिनांक 10-12-78

माया ब्रह्म का भेद है न्यारा, भेद वाद हैं भरम कथा।
जो कोई उनका रूप पिछाने, भेद वाद है धरम कथा।
बिन गुरु ज्ञान की गम नहीं होती, ज्ञान गुरु के आधारा।
गुरु की संगत करे जो प्राणी, पावे सार भेद सारा।
दृष्टि सृष्टि का सकल पसारा, जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि।
भक्ति की दृष्टि जब आई, ईश्वर मय हो गई सृष्टि।
गुन का ग्राहक कोई कोई होगा, अवगुण के ग्राहक हैं सब।
गुणी मिले तो गुण बतलावे, अगुन सगुन समझे नर तब।
राधास्वामी परम दयाला, शब्द नाव लेकर आये।
हाथ पकड़ कर सबहि बिठाया, तट के निकट खींचे लाये।

राधास्वामी। मैं बचपन से राम को मिलने निकला था। मेरा भाग्य, या अभाग्य, भगवान की इच्छा या मेरे कर्म, इस तलाश के सिलसिले में दाता

दयाल महर्षि शिवब्रतलाल जी महाराज जिनका यहां बुत Statue है के चरणों में ले गई थी। उन्होंने राधास्वामी या सन्तमत दिया था। जब इन्सान ऐसी बाणियें सुनता है तो वह स्वयं कोशिश करता है कि मुझे माया और ब्रह्म का भेद मिल जाये। अगर केवल बाणी ही पढ़ ली और उसे अनुभव नहीं किया तो उसके पढ़ने से फिर क्या लाभ ? मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊंगा। ये संतों की बाणियें मेरे लिए अचम्बा थी। मैं ग़लत तो कह नहीं सकता था क्योंकि मेरा विश्वास दाता दयाल पर था और उन्होंने वाणियों की प्रशंसा की थी। इसलिए मेरा उत्साह नहीं पड़ता था कि वह ग़लत कहते हैं मगर मेरी समझ में नहीं आती थी। इस बात को समझने के लिए मैंने सारा जीवन व्यतीत कर दिया और अब मुझे समझ आई कि जो कुछ संतों ने कहा है वह ठीक है मगर आप लोग इसे नहीं समझ सकते।

मैंने इस माया ब्रह्म का भेद तुम लोगों से पाया, दया दाता दयाल की है। उन्होंने मुझे इसलिए काम दिया था कि मुझे माया और ब्रह्म के भेद का पता लग जाये और माया और ब्रह्म भ्रम सिद्ध हो जायें और

इससे निकल जाऊं। यह मुझे कैसे पता लगा ? एक दिन पहले एक संत का पत्र आया। वह लिखता है कि आप एक दिन पहले प्रकट हुए। आप बड़े क्रोध में थे और आपने मुझे बहुत बुरा भला कहा। उसने क्षमा मांगी है कि मैंने क्या कसूर किया है ? अब मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं कि क्या तू उमके अन्तर गया था ? मैं नहीं गया न ही मुझे पता है। जब मैं ऐसी बातें अनेक प्रकार की लोगों से सुनता हूं। कोई कहता है कि मैं वहां प्रकट हुआ, कोई कहता है कि मैं वहां प्रकट हुआ और उसकी सहायता की तब मुझे माया और ब्रह्म के भेद का पता लगा।

माया ब्रह्म का भेद है न्यारा।
भेद वाद है भरम कथा।

माया और ब्रह्म फिर क्या हुआ ? हमारे अन्तर प्रकाश, नूर जो परमात्मा का अंश है जब वह इस शरीर में आता है तो हमारे अन्तर मन, बुद्धि चित्त और अहंकार पैदा हो जाता है। जो दो चार दिन का छोटा बच्चा होता है उसे कोई बुद्धि नहीं होती ? क्योंकि उसके अन्तर अभी तक मन, चित्त बुद्ध

अहंकार Develop नहीं हुये होते । ज्यों २ वह बड़ा होता जाता है वह प्रकाश रक्त द्वारा मस्तिष्क में दौरा करता रहता है । जितना वह ज़्यादा दौरा करता है उतने ही उसके अन्दर के Cells बढ़ जाते हैं और उसे सोच समझ, ज्ञान या अनुभव आने लगता है । जब तक कोई आदमी सोच विचार में फंसा हुआ है और उसे सत मानता है वह भ्रम में है ।

जिस संत ने मुझे लिखा कि मैंने उसके अन्तर प्रकट होकर उसे डांटा और क्रोध किया । मैं नहीं था । जो कुछ उसने देखा वह क्या था ? वह उसका भ्रम है । था नहीं मगर पता लगता है । ऐसे ही हम सब संसार के प्राणी इस मायावाद अर्थात भ्रमवाद में फंसे हुये हैं । हमारे अन्तर नाना प्रकार के विचार उठते हैं कभी भक्ति और कभी शत्रुता मित्रता के विचार उठते हैं । जब तक हम उन विचारों में फंसे हुये हैं अर्थात उनको सत मानते हैं । तब तक हमारा संसार का संघर्ष दुख सुख, नेकी बदी, पाप पुन्य और धर्म कर्म समाप्त नहीं हो सकते । संतों का मार्ग जीव को अर्थात जो असल में हम हैं, उसे इस संसार से

बाहर निकालने के लिए है ताकि फिर हम भ्रम में न फंसे और हमें इस संसार के कष्ट न हों, न शरीर मिले और न मन मिले। फिर हम कहां रहें ? अगर अब मैं बताऊं कि कहां रहें तो तुम नहीं समझ सकोगे और अगर मैं यह कहूं कि मन और बुद्धि से परे कोई चीज़ है तो तुम उसे नहीं समझ सकते जब तक तुम स्वयं अमल करके न देखो। तुम्हारा अमल क्या होगा ? कि मन को छोड़ जाओ। मैं मन को नहीं छोड़ सकता था क्योंकि मैं फंसा हुआ था। मैंने दाता दयाल की बहुत सेवा की, जीवन में सच्च कहा लेकिन मुझे समझ नहीं आती थी। मैं सुख में भटकता था और कभी दुख में भटकता था। सुख और दुख दोनों ही भ्रम हैं। मगर इसकी समझ हर एक आदमी को नहीं आती। मुझे आप लोगों की दया से इस संतमत की समझ आई। अब मैं उसमें रहने का यत्न करता हूं। वह संतमत बताता है कि माया और ब्रह्म से परे क्या अवस्था है ? उसे वह जान सकता है जो मन को छोड़ सकता है। इसका छोड़ना कठिन है। मैं आपको सच्ची बात बताता हूं। मैं किसी समय छोड़ भी जाता हूं मगर

यह मन कोई न कोई शक्ल बनाकर मेरे सामने आ जाता है। इसके परे एक अवस्था है जिसका मुझे अनुभव है। इसी बात को बाबा सावनसिंह जी कहा करते थे कि दस दरवाज़े लंघो ते अगे सत्गुरु खलोता ऐ। वह जो आगे सत्गुरु खड़ा है, संसार ने यह समझा हुआ है कि आगे बाबा सावनसिंह दाढ़ी वाला था यह ग़लती खाता है। वह जो असली सत्गुरु है वह न तो इन्सान है, न उसकी कोई शक्ल है और न उसका कोई रूप है। वह एक अनुभव स्वरूपी तत्व है उसे हर एक नहीं जान सकता। इसलिए संतों ने कहा हैं कि सबसे पहले अपनी बुरी माया को हटा कर अच्छी माया पैदा करो। प्रारम्भ में जब तुम रास्ते पर चलते हो तो सबसे पहला असूल यह है कि दुखदाई बुरे गन्दे और वैर भाव के विचारों को छोड़ दो। इन विचारों को गुरु के बिना कोई नहीं छोड़ सकता। यह वह भेद है जिस को आज दिन तक किसी ने नहीं समझा। जिन गुरुओं ने समझा या किसी को समझाया तो उनके मुँह बन्द दिये।

धर्म दास तोहे लाख दोहाई।

सार भेद बाहर नहीं जाई।

राधाधास्वामी दयाल ने कहा है :-

सन्त बिना कोई भेद न जाने।
वे तोहे कहें अलग में।

मैंने अलग के परदे को खोल दिया। मैंने ग़लती की या अच्छा किया, मुझे यह पता नहीं। मैंने तो केवल अपनी जान बचाने के लिए परदा खोला कि जिस प्रकार लोगों के अन्तर मेरा रूप प्रकट होता है और मैं नहीं होता। अगर मैं यह स्पष्ट वर्णन नहीं करता तो मुझे कितना दण्ड मिलेगा। जिस प्रकार हिन्दु धर्म में माया का नियम है कि सबको दण्ड मिला है। अर्जुन ने कृष्ण के मुख से गीता के अठारह: अध्याय सुने लेकिन भागवत अनुसार वह नर्क में गया और युधिष्टर जिसने सारा जीवन सच्च बोला, थोड़ी सी पोलीसी के कारण अढ़ाई घड़ी के लिए नर्क में गया। एक तो इस वास्ते मैंने सच्चाई का व्यवहार किया। दूसरे दाता दयाल ने कहा था कि जगत कल्यान और निबल अबल अज्ञानी जीवों की सहायता के लिए काम करना और भव सागर से

पार करना । मेरे जिम्मे तीन कर्तव्य थे वे मैं कर चला । निबल, अबल, अज्ञानी जीवों और संसार को कह चला हूं कि बाहर से कोई राम, कृष्ण, देवी देवता या गुरु तुम्हारे अन्तर नहीं आता । जबकि मैं किसी के अन्तर जीवित नहीं जाता तो कैसे मानूं कि कोई दूसरा आता है । केवल इस बात को परदे में रखकर ये धर्म बन गये, मुसलमान बन गये, हिन्दु बन गये और ईसाई सिख बन गये । राधास्वामी आपिस में बट गये । कोई आगरा, कोई ब्यास, कोई सावन आश्रम, कोई होशियारपुर और कोई धाम । यह जितना खेल है यह सब ग़लत समझ के कारण है इसका परिणाम क्या निकला ? हम इस अज्ञान के कारण आपिस में बट गये और एक दूसरे के सिर फटते हैं । एक दूसरे के विरुद्ध जाते हैं । मैंने इस विचार से सच्चाई को प्रकट किया । इसका क्या परिणाम निकले यह मुझे पता नहीं न ही मैं जानता हूं । हो सकता है मैंने ग़लत समझा हो मगर मेरी आत्मा मुझे ग़लत नहीं कहती । मेरे सामने और केश आते हैं । जब मैं किसी के अन्तर नहीं जाता न ही मुझे पता होता है । अगर मैं

यह सच्ची बात संसार को नहीं बताता तो क्या मैं दोषी नहीं हूं ? ये सब गुरु लोग मेरे सामने मानते हैं कि जो कुछ मैं कहता हूं वह ठीक है मगर पब्लिक को नहीं बताते। अगर पब्लिक को बतादें तो धन नहीं आयेगा और लोग पीछे नहीं फिरेंगे। यह भेद है। इसलिए मैंने गृहिस्यों के लिए सच्चाई वर्णन की है कि ऐ गृहस्थियो ! तुम बात को और गुरुमत को समझो, लुट मत जाओ। मूर्ख बनकर अपने बच्चों के पेट काटकर मत लुटो केवल इस विचार से कि सत-लोक पहूंच जाओगे और तुम्हें मुक्ति मिल जायेगी। यह एक भ्रम है। ये मंदिर मसजिदें समाध और डेरे बना देना भी भ्रम है संतों की शिक्षा या असलियत भ्रम से निकालने के लिए है। यह संसारी कामों के लिए ठीक है मगर परमार्थ के काम में यह रुकावट है। इसलिए संत किसी मंदिर या समाध को नहीं पूजते। राधास्वामी दयाल ने बाणी में भी साफ लिखा हुआ है कि समाध पूजा ठीक नहीं मगर राधास्वामीयों ने आगरे में स्वामी जी की समाध बना दी और उनका वहां लाखों रुपया खर्च हो गया पब्लिक ने वहां लाखों रुपया दिया। मैं वहां देख

आया हूं सारी सारवचन हिन्दी में लिखी हुई है। यह क्या है ? यह राधास्वामी या संतों की शिक्षा के बिल्कुल विरुद्ध है। ये संत नहीं और न ब्रह्म, न ईश्वर और न परमेश्वर के पुजारी हैं। मैं भी कभी यह सुनकर चकित हुआ करता था। दाता दयाल ने लिखा है।

मैं नहीं राम कृष्ण का सेवक ईश ब्रह्म नहीं जानूं।
मैं फकीर का नाम दिवाना सब से बढ़कर मानूं।

वह भी ऐसा ही कह गये। क्या यह ठीक है ? हां ठीक है। ऐ मानव ! मैंने आपको बता दिया कि जो कुछ भी है तेरा अपना ही आत्मा और अपना ही आप है और कुछ नहीं। जब प्रकाश रूपी आत्मा शरीर में आता है तो क्या हो जाता है ? मन, चित्त बुद्ध अहंकार पैदा हो जाते हैं। वह माया है। लोग दस दरवाजे शरीर, आंख और कान के गिनते हैं। मैं पांच कर्मइन्द्रियें और पांच ज्ञानइन्द्रियें गिनता हूं। जब तक इन्सान इन इन्द्रियों से बाहर नहीं निकलेगा वह अपने घर जहां से वह आया है नहीं समा सकता या सर्वाधार में मिल नहीं सकता। यह भेद है।

माया ब्रह्म का भेद है न्यारा, भेद वाद है भरम कथा।

मैंने आपको भरम कथा सिद्ध करदी। मेरे पास लोग आते हैं क्या वे इसलिए आते हैं ? वे तो संसार के चक्कर में आये हुये हैं। किसी स्त्री को पति छोड़ जाता है वह दुखी है, किसी को कोई कष्ट और किसी को कोई। यह संतमत सर्वसाधारण की चीज़ नहीं है। यह तो किसी विशेष २ आदमी के लिए है जो सच्चाई का इच्छुक है। सब के लिये यह है कि अपनी माया के खेल को ठीक करो बुरे गन्दे विचारों, बुराई, धोखा, फरेब, चार-सो-बीस को छोड़ कर अच्छाई और नेकी की ओर आओ ताकि तुम्हारा माया देश का जन्म सफल हो जाये।

दो मार्ग हैं, एक तो निवृतिमार्ग, केवल इस संसार से परे जाने के लिए है ताकि फिर वापिस न आओ। दूसरा मार्ग इस संसार में सुखी रहने के लिए है। इस समय तुम देखो देश की क्या दशा है ? इरान में क्या हो रहा है ? वेतनाम में कितने साल लड़ाई रही और क्या क्या होगा। पाकस्तान में क्या हुआ यह सब क्या हैं ? यह इसलिए है कि जो जीवन

में गुज़ारा करने के नियम हैं उन्हें Follow नहीं किया। ये सब झगड़े माया और ब्रह्म के देश के नियमों को पालन न करने के कारण हैं। इस माया देश का सबसे बड़ा नियम क्या है ? संकल्प, विचार। विचार ही Foundation है।

जो आदमी बच्चों को केवल बच्चों के विचार से पैदा नहीं करता, स्वाभाविक बच्चे पैदा हो जाते हैं वह लाख कोशिश करें कि उनमें सच्चाई, ज़वत अनुशासन में आयेगा। विल्कुल नहीं आयेगा। यह नियम है। विधान सभाओं में हर जगह लड़ाई होती रहती है। यह क्यों है ? क्योंकि हम सब विशेष २ को छोड़कर Uncalled for Children बिन बुलाई संतान हैं। संतान अच्छे विचार से पैदा नहीं की गई। खुदरौ संतान है अगर इनसे कोई यह आशा रखे कि ये अच्छे, नेक भारती बनें तो यह नहीं हो सकता। यह मेरा अपना अनुभव है और मैंने अपने घर और बाहर आज़माया है।

क्योंकि मेरे जिम्मे तीन कर्तव्य हैं। एक निबल, अबल, अज्ञानी जीवों की सहायता करना, वह मैं कर

चला । क्या कर चला ? मैं भेद बता चला । हमारे दखों का कारण शारीरिक और मानसिक ब्रह्मचर्य का गिरना है । इसलिए अशान्ति है । शास्त्र साफ कहते हैं कि पच्चीस साल से पहले विवाह मत करो । क्यों ? क्योंकि रक्त की चालीस बूंदों से एक बूंद ओजस की बनती है और ओजस की चालीस बून्दों से वीर्य की बून्द बनती है । जो आदमी चौवीस पच्चीस साल से पहले अपने ब्रह्मचर्य को किसी अनुचित ढंग से या विवाह से नष्ट करता है उसके भाग्य में अशान्ति, दुख, चिन्ता का आना एक स्वाभाविक बात है । इसे कोई नहीं रोक सकता चाहे जो इच्छा करले । एक तो गुरु की आज्ञा से यह सच्चाई वर्णन कर चला ।

दूसरे अपनी आर्थिक अवस्था के लिए हर आदमी को काम करना चाहिए । जब बच्चा अठारहः साल का हो जाता है अगर वह पढ़ता है तो और बात है वरना उसका कोई अधिकार नहीं है कि वह बाप या भाईयों की सम्पत्ति पर रहे । हर आदमी को अपना काम आप करना चाहिए काम चाहे छोटा हो या बड़ा, इसकी कोई बात नहीं । हमारे जितने घरेलु

दुख हैं उनका सबसे अधिक कारण यही है कि हम लोग एक दूसरे के ऊपर निर्भर हैं। पिछला समय गया जब घर का एक आदमी कमाता था और सात आदमी खाते थे। अब अगर घर में सात आदमी हैं तो सातों कमायें तब भी घर का निर्वाह कठिन चलता है। इस समय हमारी यह दशा है तीसरे इन धर्मों, पंथों और गुरुओं के पीछे मत फिरो। किसी सत्संग में केवल बात को समझने के लिए जाना चाहिए। क्योंकि सत्संग से यही मिलता।

बिन सत्संग विवेक न होई।
राम कृपा बिन सुलभ न सोई।

सत्संग इसलिए किया जाता है कि हमें सोजी आ जाये माया और ब्रह्म के तीन भेद मैंने बता दिए।

चौथा इस समय देश में क्या हो रदा है? यह मौजूदा डैमोक्रेसी (Democracy) बिल्कुल काम नहीं करेगी। इसलिए जो शान्तमय आदमी हैं उन्हें राजनैतिक लाइन Political line में बिल्कुल भाग नहीं लेना चाहिए। हम गृहस्थियों को भी राजनिति

में भाग नहीं लेना चाहिए। यह सिवाय दुख के और कुछ नहीं है। सब जगह धोखा और फरेब है। यह ब्रह्म और माया का भेद है।

माया ब्रह्म का भेद है न्यारा, भेद वाद है भरम कथा।

मैंने इस संसार का भेद बता दिया, मगर यह सारा भ्रम है। क्योंकि आखिर एक दिन सब ने चले जाना है। यह संसार क्या है? कोई दस साल जीवित रहा, कोई पच्चीस और कोई सौ साल। हम लोगों ने इस संसार को सदा के लिए सत माना हुआ है। इसलिए हम रोते पीटते हैं। हर एक आदमी अपने पुत्रों और पोतों के लिए कोशिश करता है मगर अपनी कोशिश नहीं करता कि तू मरकर कहां जायेगा। तू अपने लिए तो कुछ बना। हम धोखा फरेब चार-सौ-बीस करके उनके लिये सम्पति बनाते हैं कि हमारे पुत्र खायेंगे और लड़कियों के काम आयेगी मगर यह कोई नहीं सोचता कि भले आदमी! तू ने यहां नहीं रहना है। जब तू मर जायेगा तो पीछे से संतान जो इच्छा चाहे करे। तू उनकी चिन्ता क्यों करता है। हम बूढ़े आदमी अपने बच्चों की कितनी चिन्ता करते हैं। उनके लिए सम्पत्ति बनाते हैं अपने लिए कोई

नहीं सोचता कि भले मानुष ! जिस समय तेरी जान निकलेगी तेरा पुत्र, स्त्री और भाई तेरे किस काम आयेगा। किसी का कोई भी साथी नहीं। ब्रह्म और माया के बिना हमारा निर्वाह भी नहीं है। मगर असल में यह सब भ्रम है।

जो कोई उनका रूप पिछाने, भेद बाद है भरम कथा।

इसे समझने की आवश्यकता है। जब तक हम संसार में जीवित हैं हम ब्रह्म और माया से नहीं निकल सकते। जब तक जीवन है हम इसमें रहेंगे। केवल भेद समझ लो और असलियत को जान लो ताकि तुम्हें पता लग जाये फिर तुम नहीं फंसोगे। अब तुम यहां सत्संग के लिये आये हो तुम्हें पता है कि तुम दो घण्टे के बाद यहां से चले जाओगे तो आपको फिर यहां कोई बन्धन नहीं होगा। ऐसे ही जिसे यह ज्ञान हो जाता है और इसका भेद जान जाता है वह संसार में जीवन्मुक्त अवस्था में रहता है।

बिन गुरु ज्ञान की गम नहीं होती, ज्ञान गुरु के आधारा।
गुरु की संगत करे जो प्रानी, पावे सार भेद सारा।

वह कहते हैं कि गुरु की संगत के बिना भेद का पता नहीं लगता। जब संगत करोगे तब तुम्हें सारा भेद मिलेगा। अब आप बताओ कि जो बात मैंने कही है क्या कोई महात्मा कहता है ? क्या कोई पंथ वाला पब्लिक प्लेट फार्म पर कहता है कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता ? कोई नहीं कहता वे भेद नहीं देते हैं। अगर दाता दयाल ने गुरुआई की तो धाम के लिए की। वह बहुत साफ लिख गये मगर ज़बानी खुलकर नहीं कहा जैसे कि मैंने कहा है। किसी ने केवल डेरे के लिए काम किया इसलिए भेद को छुपाकर रखा, सच्चाई वर्णन नहीं की। सब धर्म वालों ने अपना अपना प्रापोगेण्डा किया। मैं अनामी धाम से इसीलिए आया हूं कि मैं सच्चाई वर्णन कर जाऊं। प्रकृति ने मेरे मस्तिष्क को हिलाया है ऐसा नहीं कि मुझे कोई सुरखाब का पर लग गया है या मैं लोगों को कुछ दे सकता हूं। मैं तो आप लोगों को केवल सच्ची बात सच्चा भेद बताता हूं और मुझ में कोई शक्ति नहीं। हर आदमी को जो कुछ मिलता है अपने कर्म का फल मिलता है। जब संतों को भी अपने कर्म का फल भोगना पड़ा, वे

बीमार हुये, उनके लड़के नालाइक निकले तो तुम क्या आशा कर सकते हो कि क्या वे सन्त तुम्हारा या संसार का भला कर देगें ? आपने अपना भला आप करना है। गुरु ने तुम्हें मार्ग बताना है। इसके अतिरिक्त जो गुरु को अधिक महत्व देते हैं वे पागल, अज्ञानी और मूर्ख हैं। गुरु की संगत के बिना काम नहीं चलता।

बिन गुरु ज्ञान की गम नहीं होती, ज्ञान गुरु के आधारा।
गुरु की संगत करे जो प्राणी, पावे सार भेद सारा।

जब आदमी गुरु की संगत करता है तो उसे हकीकत का पता लग जाता है फिर वह फंसता नहीं। सत्संग का यही भाव है कि मानव को सच्चा ज्ञान मिल जाये और Line of action मिल जाये। मेरे जैसे इन्सान के पांच छः सत्संग किये हुये सारे जीवन भर के लिए काफी हैं। उसे कहीं धक्के खाने की आवश्यकता नहीं। केवल अपनी Practical life का अमल रह जाता है। क्योंकि संसार में संसार की इच्छायें और आशायें हैं इसलिए यह बात समझ में नहीं आती। यह जो कुछ मुझे या तुम्हें मिलता है यह हमारे पिछले और कुछ इस जन्म के कर्म हैं।

गुन का ग्राहक कोई कोई होगा, अवगुण के ग्राहक हैं सब ।
गुणी मिले तो गुण बतलावे, अगुन सगुन समझे नर तब ।

संसार में कोई २ आदमी है जो इस लाईन का जानने वाला है । मैं इन संतों की वाणियों को समझने के लिए मर गया कि क्या लिखा हुआ है। मैं तो राम को मिलने निकला था। उन्होंने कहा कि राम मन वाणी वा बुद्धि से परे मिलता है । मैं परे नहीं निकल सकता था । यह लिखा हुआ था कि गुरु की सेवा करो । जो मुझसे हो सका मैंने किया । गुरु ने जब यह देखा कि यह मूर्ख है और इसको समझ में नहीं आता तो यह काम दे दिया और कहा कि तुझे गुरु, सत्संगियों के रूप में मिलेगा अब तुम लोगों की दया से मैंने इस भेद को पाया कि ये जितने खेल होते हैं ये तुम्हारे अपने ही मन का नक्शा है और बाहर से कोई नहीं आता । सब फज़ूल बातें हैं । तुम्हारा अपना आत्मा है मगर हर धर्म और हर गुरु ने बातें बना बनाकर हमें मूर्ख बनाकर अपने जाल में फंसाया है । मैं तो आप कहता हूं कि मैं समय का संत सत्गुरु हूं । आपको सच्चाई और भेद बताये जाता हूं। ये जितने

फसाद होते हैं ये क्यों होते हैं ? क्योंकि अज्ञान है। मुसलमान समझते हैं कि उनकी सहायता हज़रत अली और मुहम्मद करता है, हिन्दु कहते हैं राम सहायता करता है, पंथ वाले कहते हैं कि गुरु सहायता करता है। कोई नानक पंथी बन गया, कोई दादू पंथी बन गया, कोई राधास्वामिया हो गया, कोई सावन अश्रमिया हो गया और कोई होशियारपुरिया बन गया। यह क्या है ? यही तो भ्रम है। क्योंकि मेरे ऐसे ग्रह हैं। मैंने यह काम करना था। इसलिए मैं विवश होकर यह काम करता हूं। मैं जानता भी हूं कि कौन सुनता है, कोई नहीं सुनता। तो मैं समझता हूं कि मैंने ग़लती खाई है। जिसके कर्म में ठीक होना है वह ठीक होगा। इसलिए दाता ने कहा है कि कोई कोई सन्तमत का अधिकारी होता है सब नहीं होते।

राधास्वामी परम दयाला, शब्द नाव लेकर आये।
हाथ पकड़ कर सबहि बिठाया, तट के निकट खीचे लाये॥

शब्द योग में क्या नई चीज़ है ? जो शब्द अपने अन्तर सुरत से सुना जाता है वहां मन नहीं होता। यह घण्टा, संख, ओं, रारंग सारंग ये सब मन के

शब्द हैं चौदह लोक तक मन जाता है। इनसे कुछ लाभ होगा। ऐसा नहीं कि लाभ नहीं होगा मगर समय आने पर वह गिर जायेगा। जैसे मैंने आपको अपने बारे बताया कि मैंने बीनें सुनी। क्या मैं फिर घर में नहीं फंसा? मैं गृहस्थ में फंसा। इसलिए जो सार शब्द है वह कब आयेगा? अब मुझे उस सार शब्द का पता लगा। जब मैं मन के विचारों को छोड़कर आगे जाता हूं उस अवस्था में जो शब्द होता है और जो चेतनता होती है उसका नाम सार शब्द है। सन्तों का वह सार शब्द है।

गृहस्थियों को जो नाम दिया जाता है वह उनके मन को स्थिर करने और नेक बनने के लिए दिया जाता है। सबसे पहले हर गृहस्थी को नेक और अच्छे विचार अपनाने चाहिएं। घरों में शान्ति, प्रेम और स्नेह से रहो। जिस घर में कलह है वहां कभी सुख नहीं। हमने खूब देखा।

घर घर देखा एक ही लेखा, क्या पण्डित क्या काज़ी शेखा।

जिस घर में सास और बहु का आपिस में द्वेष है, बाप बेटे का द्वेष है वहां सुख नहीं। अब आपने

देखना देश में क्या होता है। ये पार्टियाँ एक दूसरे के विरुद्ध हैं। यह क्या है ? यह :-

"आपत काले विपरीत बुद्धि।

जब मुसीबत का समय आता है तो आदमी की बुद्धि भी चली जाती है। जब दुख आना होता है तो बड़े बड़े बुद्धिमान फेल हो जाते हैं। रामचन्द्र जी को भी पता न लगा कि यह मरीच है और धोखा है। इस समय आपत काल आया है। केवल भारतवर्ष पर ही नहीं बल्कि सारे संसार पर और मुझे तो डर है कि शायद दो चार साल में पता नहीं क्या हो जाये, जब मैं यह बात कहता हूं तब मैं सोचता हूं कि फकीर चन्द ! क्या तू गप तो नहीं मारता ? मैं गप नहीं मारता। दो गुणा दो बराबर है चार के। जो कुछ हम सोचते और विचारते हैं उसका प्रभाव हम पर अवश्य होगा। जब स्वप्ने के विचारों का हम पर प्रभाव होता है तो जो कुछ हम जाग्रत में सोचते हैं उससे बचकर कहां जाओगे। जिस बात को मैंने स्वयं आज़माया है वह मैं कहता हूं। मेरे पास मेरे मिलने वालों के ऐसे ऐसे उदाहरण हैं जहां उनके घरों में शत्रुता थी। पहले उन्हें कहता था कि तुम्हारी हानि

होगी। उनकी हानि हुई। शत्रुता, झगड़ा, फ़साद रागद्वेष के जो विचार उठते हैं उनका प्रभाव अवश्य होगा, अवश्य तबाही होगी, कोई नहीं रोक सकता। जो कुछ तुम सोचोगे वह होगा। इस लिए मैं गृहस्थियों को बार २ कहता हूं कि घरों में शान्ति रखो और विषय विकार कम कमाओ। जीवन विषय भोगने के लिए नहीं है। मेरा भाव यह नहीं कि विवाह न हो मगर Uncalled for Children खुदरौ संतान पैदा मत करो। यह महादोष और महापाप है। मैं आप लोगों का उपकार मानता हूं कि आप आ जाते हैं और मुझे अपना कर्म काटने के लिए सहारा बन जाते हैं। मैंने आपको सार का सार बता दिया। अगर तुम्हें मेरी बात में कोई सच्चाई दिखाई देती है तो उसपर अमल करो और अपना जन्म बनाओ।

सब को राधास्वामी !

सत्संग परम दयाल जी महाराज मानवता मन्दिर होशियारपुर।

दिनांक २४-१२-७८

मैं तरयानवें वर्ष का हो गया हूं। मैं जानता हूं। कि अब मैंने चले जाना है। मेरा भाग्य या दुर्भाग्य मुझे एक दृश्य द्वारा दाता दयाल के चरणों में ले गया। वह मेरे पहले विचारों को बड़ी युक्ति से बदल कर गुरुमत की ओर लाये। गुरुमत में सबका खण्डन था। कबीर साहिब और स्वामी जी ने व्यास, प्राशर, दत्तात्रेय जितने भी हिन्दुओं के बड़ें पूर्वज थे, किसी को नहीं छोड़ा। उन्होंने कहा कि सब अधूरे हैं। उस समय मैंने प्रण किया था कि इस मार्ग पर चलूंगा जो कुछ मुझे मिलेगा वह मैं बता जाऊंगा। मैं अपना कर्म भोगता हूं। मेरा किसी पर कोई उपकार नहीं। आप लोग आ जाते हैं, मुझे अपने दिल का जज़्बा निकालने का अवसर मिल जाता है। मैं आपका

उपकार मानता हूं। आपका धन्यवादी हूं कि आप मेरा कर्म काटने के लिए आ जाते हैं और मेरी बातें सुनते हैं।

मैंने राधास्वामी मत को क्या समझा? पहले तो मैं राम, कृष्ण का ध्यान करता था। वह छूट गया। कैसे छूटा ? वह मैंने आप को बता दिया कि एक बार कृष्ण जी की मूर्ति मेरे आगे आगे चलती थी। वहां गाय का गोबर पड़ा था। उस मूर्ति ने मुझे कहा कि गोबर खाले। मैंने गोबर खा लिया। फिर विचार आया कि कहीं ऐसा नहीं लिखा हुआ है कि कृष्ण ने अपने भगत को कहा हो कि गोबर खाले। चौबीस घण्टे रोया। क्योंकि हिन्दु था इसलिए अवतार का वर्णन मेरे मस्तिष्क में आता था। तो एक दृश्य मुझे दाता दयाल के चरणों में ले गया। मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊंगा। दाता दयाल ने कहा था कि शिक्षा को बदल जाना। यह काम मुझे सन्तमत को समझने के लिए दिया था।

जब सत्संगियों ने मुझे यह कहा कि मेरा रूप अभ्यास या जाग्रत में उनकी सहायता करता है,

मरते समय ले जाता है और मैं नहीं होता तो मुझे विश्वास हो गया कि मेरे अन्तर जितने भी विचार दृश्य उठते हैं यह असल में माया है, कल्पना है, हकीकत नहीं है। क्योंकि जिसके अन्तर मेरा रूप प्रकट होता है मैं तो होता नहीं वह मुझे अद्भुत चमत्कार बताते हैं जो मैं तुम्हें कई बार सुनाता रहता हूं। फिर मैं इस नाम को छोड़ जाता हूं और आगे उस चीज़ की तलाश करता हूं जो प्रकाश में रहती हुई प्रकाश को देखती और शब्द को सुनती है, उसका अन्त नहीं मिलता। अगर मैं इतना अभ्यास करने के बाद वहां पहुंचकर कुछ कर सकता तो मैं मान लेता कि मैं कुछ बन गया। मुझे खारिश का कष्ट रहता है। मैं अपनी खारिश को दूर न कर सका, दवाइयें लेता हूं। दूसरों को कुछ मिलता है, वे कहते हैं कि मैं देता हूं, मैं नहीं देता और न कुछ करता हूं। क्योंकि मेरा हृदय अन्तर और बाहर से एक है, जो होने वाली बात होती है वह मेरे मुँह से निकल जाती है। यह नहीं कि मैं कुछ करता हूं। यह बिल्कुल सच्ची बात है। मैं ही नहीं, सभी सन्तों का यही हाल रहा है। इससे सिद्ध हुआ कि जो आदमी वहां चला जाये और इतना ऊंचा भी

चढ़ जाये वह संसार में सिवाय ज्ञान और शुभ भावना देने के और कुछ नहीं कर सकता । क्योंकि हम लोगों ने सच्ची बात नहीं कही । बेचारे अनजान और अज्ञानी जीव मूर्ख बनकर लुट गये । लोग कहते हैं कि मैं मरते समय गया और उन्हें ले गया, अन्त समय गुरु ले जाता है। मेरी तो समझ में नहीं आया ।

मैंने अपनी खोज Research में यह समझा है कि मैं कौन हूं । अगर तो मैं वहां पहुंचकर कुछ बन जाता और कुछ कर सकता तो मेरे में भारत वर्ष के लिए प्रेम का बड़ा भारा जज़्वा है। इस समय हम पर जो विपत्ति आ रही है, आपस में झगड़े हो रहे हैं, मैं उन्हें ठीक कर सकता लेकिन मैं नहीं कर सकता । मैं किस परिणाम पर पहुंचा कि मैं कौन हूं ? मैं एक चेतन का बुलबुला हूं । मैं राम को मिलने के लिए निकला था कि राम कहां है । मेरी समझ में क्या आया ? कि हर एक इन्सान चेतन का एक बुलबुला है । जब तक उसे अपना ज्ञान नहीं वह इस संसार में दुख और सुख भोगता रहेगा । अब अपने इस अनुभव के प्रमाण में मैं स्वामी जी की बाणी आपको बताना

चाहता हूं। यह प्रश्नोत्तर के सिलसिले में है। सुरत स्वामी जी या परमात्मा से प्रश्न करती है। जो असल में हजूर महाराज स्वामी जी से पूछते हैं क्योंकि वह उनको मालिक का अवतार सत्गुरु मानते थे। वही उनसे प्रश्न कर रहे हैं।

अब सुरत पूछे स्वामी से, भेद कहो अपना तुम मो से।
बास तुम्हारा कौन लोक में, यहां आये तुम कौन मौज से।
देश तुम्हारा कितनी दूर, खोजे सुरत न पावे मूर।

वह कहते हैं कि मैं तलाश करते २ थक गया। मुझे तेरे देश का पता नहीं लगता। वह स्वामी जी से प्रश्न करते हैं कि गुरु का देश कौन सा है?

मैं बिछड़ी तुम से कहु कैसे, देश प्राये आये जैसे।

यह तो सभी जानते हैं कि जिस संसार में हम रहते हैं यह तो हमारा देश नहीं है। हम कहीं से तो आये हैं और हमने कहीं जाना है। कोई सौ साल के लिए आया, कोई पच्चास साल के लिए और कोई दस साल के लिए आया। सभी जानते हैं मगर हम इस बात को सोचते नहीं। हम तो संसार के झगड़े में पड़े रहते हैं कि यह नहीं हुआ और वह नहीं हुआ हम सारे इसी झगड़े में लगे रहते हैं।

मेरा हाल भिन्न कर गाओ, देश अपना मोहे लखाओ।

मैं राम को मिलने निकला था। दाता दयाल ने कहा था कि तेरे अन्तर राम रहता है। यही प्रश्न हज़ूर महाराज स्वामी जी से करते हैं कि मेरा देश कौन सा है जहां से मैं आया हूं या जहां से आपने आकर हमें चिताया है।

मन तन संग पड़ी मैं कब से, दुख पाये बहु तक मैं जब से।

हम इस मन के साथ लगे हुए हैं। हमारे सारे दुख विपत्तियें मन की ही हैं। अपने मन के विचार से, कल्पना करके, किसी को बाप, बेटा, भाई या किसी को कुछ समझकर या अनेक प्रकार के विचारों से इस मन के चक्कर में फंसे हैं। इससे यह सिद्ध हुआ कि अगर कोई आदमी अपने घर जाना चाहता है तो उसे मन को छोड़ना पड़ेगा वरना उसे पता नहीं लगेगा। मन क्या करता है? तुम ध्यान सुमिरन करते हो,अन्तर गुरु का रूप बना कर बातें करते हो, वह मन से ही करते हो। जब तक किसी का सुमिरन, ध्यान शक्लें समाप्त नहीं होती उसके तो बाप को अपने देश का पता नहीं लग सकता। इस समय राधास्वामीमत या दूसरे सन्तों की कितनी टोलिएं

या गुरु हैं। कोई सच्चाई वर्णन नहीं करता। अगर किसी ने सच्चाई वर्णन की है तो केवल इशारा किया है या अगर किसी ने साफ लिखा है तो इन गुरुओं ने प्रकट नहीं किया।

क्यों भूली मैं देश तुम्हारा, आये पड़ी प्रदेश निहारा।

हम कहीं से तो आये हैं। यह देश हमारा नहीं है। क्या कोई यहां सदा के लिऐ बैठने वाला है? कोई नहीं। मगर यह कोई नहीं बताता संसार के झगड़ों में पड़े हैं। मैंने क्योंकि प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जांऊगा और दाता दायल ने कहा था कि शिक्षा को बदल जाना। इसलिए मैं यह काम करता हूं। यद्यपि मैं जानता हूं कि मेरे इस काम का कोई विशेष लाभ संसार को नहीं पहुंच सकता सिवाय उन आदमियों के जो सच्चाई की तलाश में हैं और सच्चे बनकर स्वयं अपने घर को जाना चाहते हैं।

पाताल बसो कि मृत्यु लोक में, स्वर्ग बसो कि ब्रह्म लोक में।
विष्णु लोक बैकुण्ठ धाम में, इन्दर पुरी या शिव मुकाम में।

यह प्रश्न कर रहे हैं कि असली मालिक कहां और किस लोक में रहता है? फिर वह उत्तर देते हैं।

तब हंस स्वामी बोले, सुनो सुरत तुम मैं कहुं खोले।
जो तू पूछे भेद हमारा, कहुं सभी अब कर बिसतारा।
मैं हूं अगम अनाम अमाया, रहूं मौज में अधर समाया।

वह उत्तर देते हैं कि वह मालिक अगम और अमाया है। इसका मुझे तुम लोगों से विश्वास हुआ जब मैंने तुम लोगों से सुना कि मेरा रूप तुम्हारी सहायता करता है। ऐसे चमत्कार मेरे सामने आते हैं कि मेरी तो अकल चकित हो गई और काम नहीं करती। लोगों का अपना ही विचार, विश्वास और श्रद्धा है या उनका अपना ही मन या माया है। ये जो मेरे रूप को बना लेते हैं, मेरा रूप उनकी सहायता करता है। मेरा जो अनुभव निकला क्योंकि वही स्वामी जी का भी है। इसलिए मैं विवश होकर स्वामी जी की बात मानता हूं। जब सृष्टि नहीं थी तो जो चीज़ सदा दायम और कायम थी वह मालिक, तत्व और ज़ात है। वह सदा ऊपर रहता है यहां नहीं रहता। जिस प्रकार यहां सूर्य नहीं रहता लेकिन सूर्य की किरणें रहती हैं। अगर सूर्य यहां आ जाये तो हम जल कर मर जायें। इसी प्रकार वह मालिक यहां

नहीं रहता । उसकी किरण, सुरत रूप से हर आदमी के अन्तर मौजूद है । अगर कोई सच्चे दिल से उस मालिक की भक्ति करना चाहता है तो उसे क्या करना चाहिए ? वह तो यहां नहीं है । या तो अपने शरीर. मन और आतमा को भूलकर उस अवस्था में चले जाओ या वह सुरत रूप हर आदमी के अन्तर है, इन्सान इन्सान की सेवा करे । यही मालिक की सच्ची भक्ति है कि आदमी आदमी की सेवा करे । एक आदमी सारे संसार की सेवा तो नहीं कर सकता, मालिक ने जिनको तुम्हारे साथ लगाया है जैसे तुम्हारी पत्नी, बच्चे, मां, बाप, बिधवा, बहन और सम्बन्धि उनकी निष्काम सेवा करो वह सच्चे मालिक की भक्ति है । गुरु को फूल चढ़ाने, कपड़े देने, गुरु की प्रशंसा करने और टंडोरा पिटवाने से कोई लाभ नहीं । तुम वहां नहीं जा सकते । गुरु की बात को समझो ।यही वह कह रहें हैं कि मैं अधर समाया रहता हूं । अगर कोई उसे मिलना या उसकी सेवा करना चाहे तो क्या करे ? इसमें झूठ नहीं कि यहां नहीं रहता, इस वास्ते सब से पहले अपने घर वालों की सेवा करो । जो आदमी मंदिर में जाकर घण्टियां

बजाता है वह ईश्वर या मालिक का भक्त नहीं है मालिक तो अधर में रहता है:-

भूर्भुवः स्वः महःजनः तपः सत्यं तत् सवितुर्वरेणियं भर्गो देवस्य धि महि धीयो यो न प्रच्योदयात् ।

यह सनातन धर्म कहता है और राधास्वामी मतवाले कहते हैं सहस दल कवल, त्रिकुटि, सुन्न, महासुन्न, भंवर गुफा, सतलोक, अलख अगम। यह एक ही बात है। मुसलमानों में जबरुत मलकूत, हूत अलहूत ऐसे नाम हैं। मुझे तो अब पिछली आयु में पता लगा। मैं तो सारा जीवन राम को ढूंढ़ता मरगया, दाता दयाल की आरती करता मरगया, उस को राम या मालिक का अवतार समझ कर दस २ बारह २ हज़ार रु० का सामान लेकर आरती करता था और वह मुझे सदा फटकारा करते थे, अब समझ आई कि अगर कोई मालिक को मिलना चहता है और मालिक की भक्ति करना चहता है तो पहले अपने घर वालों की भक्ति करे। तुम आप सोचो कि तुम्हारी स्त्री से नहीं बनती, भाई से नहीं बनती फिर तुम यह दावा करते हो कि हम अमुक गुरु के चेले

हैं यह सब बकवास है। संसार में हमें धोखा देने के लिए सारा काम किया गया है। जो आदमी अपने घर वालों की सेवा नहीं कर सकता वह सत्संगी नहीं है। क्योंकि मालिक यहां नहीं रहता। मालिक की क्या सेवा है ? वह सुरत रूप में है जिस प्रकार सुर्य की किरण सब जगह रहती है। इस संसार में रहते हुये उनकी सेवा करो जिनको प्रकृति न तुम्हारे साथ लगाया है या किसी गरीब को धन, शक्ति या मीठी ज़बान से सहायता करो अगर तुम्हारे पास धन या शक्ति है तो किसी ग़रीब दुखिये की सहायता करो। अगर तुम्हारे पास धन है तो धन से, शक्ति है तो शक्ति से और अगर मीठी ज़वान है तो मीठी जवान से सहायता करो। मैंने अपने जीवन में यह समझा है और मुझे इसका पूरा विश्वास है मैं चाहता हूं किराधास्वामी मतवाले या दूसरे गुरु मेरा खण्डन करें अगर मैं ग़लत हूं। मैं उस आदमी को सत्संगी भी नहीं मानता जिसकी स्त्री के साथ नहीं बनती। जिस स्त्री की अपने पति से नहीं बनती कौन कहता है कि वह सत्संगन है। जिसकी बाप के साथ नहीं बनती और बाप की बेटे के साथ नहीं बनती ये कौन हैं ? चार-सौ-बीस करते हैं।

मेरा भेद न कोई पावे, मैं ही कहूं तो कहन में आवे।

वह कहते हैं कि मालिक का भेद कोई नहीं जानता। अगर कोई गुरु ही बताये तो वह जान सकता है। मैंने आपको बता दिया कि जिस मालिक के लिए हम मंदिर, मसजिद, गिरजा या गंगा जाते हैं वह मालिक वहां नहीं रहता। इसी एक चक्कर में लाकर हर एक धर्म वा पंथ ने हमें मूर्ख वनाकर लूटा है। किसी ने सच्चाई वर्णन नहीं की। उनका भी कोई दोष नहीं क्योंकि सच्चाई सुनने के लिए कोई तैयार नहीं। संसार संसार के पीछे फिरता है सच्चाई के लिए कौन फिरता है। मैं सच्चाई के लिए फिरा हूं। मैं देखना चाहता था कि मेरा राम कहां है। संतों की बाणियें सुनी तो दिल को और दुख हुआ।

प्रथम अगम रूप मैं धारा, दूसरा अलख पुरुष हुआ नियारा।
तीसर सत पुरुष मैं ठहरा, सतलोक में ही रुख लिया।

अब यह प्रश्न पैदा होता है कि यह जो कुछ लिखा हुआ है क्या यह ठीक है ? हां ! तुम रात को गहरी नींद में सो जाते हो, कुछ होश नहीं रहती, न अपनी, न घर, न गुरु और न राम कृष्ण की।

उस समय से जब तुम्हें पहली बार होश आती है वे जो तुम्हारी Self की जो अवस्थायें हैं उनका नाम अगम अलख, सत, आद अवस्था जिसका उदाहरण जब आप गहरी नींद से उठो तब तुम्हें पता लगेगा। यह ठीक है अर्थात यह अनुभव है।

इन तीनों में मेरा रूप, यहां से उतरी काल अनूप।

उन्होंने यह कहा है लेकिन मैं नाककटों में शामिल नहीं हुआ। मैंने हर एक चीज़ को आज़माने का यत्न किया है। हर एक चीज़ जागती और सोती है। ज़मीन जागती और सोती है। हर एक चीज़ की तीन हालतें हैं। जो हमारी आद सुरत है उसका मुझे पता नहीं लगता था। मैं तो मन को ही सुरत समझता था। जब समझ आई तब से मैं मन को छोड़कर ऊपर जाता हूं। जब मन छूट जाता है और मन के विचार और शक्लें बन्द हो जाती हैं तो जो बाकी रह जाता है, वह हो तुम सुरत। इस में Consciouness भी है और होश भी है। कब ? जब आप ऊंचे चले जाते हो। मैंने जो कुछ समझा कि मैं कौन हूं ? मैं एक चेतन का बुलबुला हूं। वही स्वामी जी भी आगे लिखते हैं।

सुनो सुरत तुम अपना भेद, तुम हम मैं थी सदा अभेद

इस एक कड़ी ने मेरी Research को सच्चा सिद्ध किया। मैं कौन हूं ? मैं Supermost Consciousness का एक बुलबुला हूं। वह कहते हैं कि सुरत ! तू अपना भेद सुन। तू मुझ में अभेद थी। अभेद का क्या भाव ? जैसे दूध में मक्खन रहता है मगर मक्खन दिखाई नहीं देता। जब दूध में गति होती है तो मक्खन पैदा होता है ऐसे ही हमारे आद में Individuality अलग सत्ता नहीं होगी, न द्वैत होता है और न अद्वैत होता है। उसमें गति होती है तो शब्द प्रकट होता है। तब हम प्रकट होते हैं। अगर कोई उस मालिक को मिलना चाहता है तो क्या करे? अपने आपको शरीर, मन, प्रकाश और शब्द से अलग करके देखे। यद्यपि मुझ से वहां ठहरा नहीं जाता मगर मैं जान गया कि मैं कौन हूं ? मैं चेतन का एक बुलबुला हूं। वह एक परमतत्व है। उसमें ऊपर के लोकों से हिलोर उठती है, गांठ बनती है और वह नीचे आती है। फिर जब वह दुखी हो जाती है तो गुर मिलता है और वह अपने में वापिस चली जाती

है। जिस प्रकार समुद्र में बुलबुले बनते रहते हैं और उसी में समाते रहते हैं इसी प्रकार यह सृष्टि उस परमतत्व से पैदा होती रहती है और उसी में समाती रहती है। उसका किसी ने अन्त नहीं पाया। हमारा ज वन क्या है ? "लब खुले और बन्द हुये" मगर केवल यह समझ लेना कि जीवन चैतन का बुलबुला है आधा लाभ है। जब तक तुम अपने अन्तर चलकर न देखो अर्थात शरीर को छोड़ो फिर प्रकाश और शब्द में जाकर उस चीज़ की ओर ध्यान दो जो प्रकाश को देखती और शब्द को सुनती है, वहां तुम्हें यह अनुभव होगा फिर तुम्हारे लिए न तो कोई आवागवन है और न मुक्ति है। आवागवन तो तब होगा जब तुम अपने अन्तर के विचारों को सत मानकर उनके पीछे लगोगे। मुझे तुम लोगों की दया से सच्चाई का पता लगा और यही एक परदा था जिस परदे में रखकर मानव जाति भिन्न-भिन्न धर्मों और पंथों में बट गई। अगर आज मुझे सच्चाई न मिलती तो चाहे मैं नर्क में जाता, मैं इस राधास्वामीमत या गुरुमत के विरुद्ध वह ज़हर उगलता कि संसार याद रखता। अब भी वे यहां ग़लती खाते हैं। मैं किसी का

लिहाज़ नहीं करता। यह भेद मैंने समझा। इसकी पुष्टि स्वामी जी और कबीर साहिब करते हैं।

जहं पुरुष तहवां कछु नाहिं कहै कबीर हम जाना।
जो कोई हमरी सैना समझे पावै पद निर्वाना।

कुछ नहीं तो आप ही हो गया। चैतन का बुलबुला ऊपर चला गया, टूट गया। पानी-पानी में मिल गया, खेल समाप्त हो गया।

काल करी हम सेवा भारी, सेवा बस होये कुछ न विचारी।

यह उनकी वर्णन शैली है। क्या भाव ? मैं नहीं जानता। यह तो मैं जानता हूं कि काल है। काल ने कैसे सेवा की ? मुझे यह पता नहीं। मैं जो समझता हूं वह यह है कि मन शान्ति या कुछ चाहता है। शायद मेरी ग़लती हो ! मैं कहता हूं कि मानव की रूह मानव में हो जाती है। लोग कहते हैं कि इन्सान कीड़े मकौड़ों से आता है। मेरी बुद्धि नहीं मानती। गन्दे पानी में कीड़े अपने आप पैदा हो जायेंगे। जो असली चीज़ है वह केवल इन्सान के अन्तर है। इस वास्ते इन्सान की महिमा बहुत भारी है। शास्त्र कहते हैं कि जब संसार रचा गया तो

अधूरा था इसलिए उसमें सुरत आई। अधूरा का भाव है जैसे समाचार पत्रों में पढ़ा है कि कई आदमी दो दो साल हो गये वेहोश पड़े हैं मगर वे जीवित हैं। रक्त चलता है और उन्हें टीकों या किसी ढंग से खुराक भी देते हैं मगर होश नहीं। तो इससे यह पता चला कि मैं कौन हूं ? वह एक परमतत्व है। उसका खेल है। मानव रूप में एक केन्द्र बन गया। अगर हम लोग अपनी सुरत को जो असल में हम हैं जो कुछ हमारे मन से निकलता है इससे मरते समय हटा लेंगे तो फिर हमारे लिए जन्म नहीं है। अगर तुम नहीं हटाओगे तो तुम्हें दूसरा जन्म फिर लेना पड़ेगा जब तक कि तुम्हारा चेतन का बुलबुला नहीं टूटेगा। एक तो बुलबुला शरीर का है, यह मिट्टी का है। एक मन, एक प्रकाश और एक शब्द का है। तो मुक्ति क्या हुई ? जीवन क्या निकला ? क्योंकि हममें "मैं" है वह "मैं" हमें दौड़ाती है।

आगे शिष्य प्रश्न करता है कि आपने मार्ग तो बता दिया आपने कहा तुम को सेवा बस काल को सौंप दिया, शरीर में भेज दिया, क्या पता है कि

अगर आप चाहें तो फिर भेज दो। तो स्वामी जी कहते हैं कि एक बार यह मौज ज़रूर। इसका क्या भाव ? कि इन्सान की ग्रन्थी बनती है, जब उसे ज्ञान हो जाता है तो फिर समाप्त हो जाती है उसके लिए कोई जन्म नहीं। ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं। लोगों ने यह समझा हुआ है कि हम सन्त, ब्रह्म या ईश्वर हैं हम यह कर सकते हैं। मैं यह नहीं समझता। मेरा तो ज्ञान यह है जो मेरी समझ में आया है कि मैं चेतन का एक बुलबुला हूं। यह मेरी तरयानवे साल की आयु की खोज (Research) है। मैं तलवार की धार पर चला हूं जो सच्चाई मिली वह बता दी।

आप संसारी हैं। आप को न तो मुक्ति की इच्छा है न मालिक के मिलने की इच्छा है। आपको शरीर और मन की आवश्यकता है अर्थात संसारी सुख की। उसके लिए वेद मार्ग है "शिव सकल्पं अस्तु" सदा अच्छा विचार रखो। जैसा तुम्हारा ख्याल है वैसा तुम्हारा हाल है। बस इतनी ही बात है। अगर आदमी समझ ले तो अपने आपको बना सकता है। क्योंकि तुम्हारे विचार संकल्पं में शक्ति है। मेरे पास

कई आदमी आते हैं जिन्हें घरों में कष्ट होता है। जिस घर में शत्रुता झगड़ा है, मैं सदा कहता हूं वहां कोई न कोई विपत्ति आयेगी। मेरी भविष्य बाणी यह है कि इस समय सरकार की जो वर्तमान चुनाओ प्रणाली है इसमें रागद्वेष घृणा आदि बहुत हैं। पहले भी ऐसा होता था लेकिन पहले दो भाईयों में होता था या परिवार में होता था। अब सारे देश में है। भारतवर्ष में अवश्य तवाही आयेगी। नहीं आती तो जो कुछ मैंने सीखा है यह सारा ग़लत और बकवास है मैं क्यों कहता हूं ? क्योंकि विचार में शक्ति है। यह माया देश है। जहां सास बहु की नहीं बनती है वहां विपत्ति आयेगी। कोई नहीं रोक सकता जो इच्छा चाहे कर लो। इसलिए अगर संसार में सुखी रहना चाहते हो तो आपिस में प्रेम और स्नेह से रहा करो। घर में शान्ति रखो क्योंकि तुम्हारे विचार का फल तुम्हें मिलना है। आजकल बहुत लड़के लड़कियां मंगलीक पैदा होते हैं। क्यों ? क्योंकि पति पत्नि तो मिलते रहते हैं मगर उनके दिल नहीं मिले हुये होते। फिर संतान ने तो मंगलीक होना ही है, कौन रोक सकता है। इस वास्ते हमारे शास्त्रों ने हर

आदमी के कर्त्तव्य बनाये हुये हैं। स्त्री, पति, और भाई का कर्त्तव्य। हर एक आदमी अपने २ धर्म का पालन करे। ऐसा करने से तुम्हारा संसार का जीवन ठीक हो जायेगा। जिस घर में स्त्री कलह करती है उस घर में कभी सुख नहीं। कुछ न कुछ नुक्सान अवश्य होगा। यह बिल्कुल सच्ची बात है। मैं नाम नहीं लेना चाहता। मेरे पास ऐसे २ केस आये हैं मैं देखता हूं कि जिन जिन घरों में शान्ति नहीं रही है वहां विपत्ति ही विपत्ति आई है। एक बड़े भारी हकीम थे। उसके घर में भी उसकी स्त्री की ओर से शान्ति नहीं थी। वह मर गया, उसका लड़का बाहर चला गया, और वह आप पिछली आयु में पाग़ल हो गई तीन साल के बाद मर गई। इस वास्ते अपने कर्म को ठीक करो। राम राम बेशक न जपो। अगर संसार में सुख चाहते हो तो अपने घरों में शान्ति रखो। यह मेरी आवाज़ है। यह माया देश है। माया में वासना तथा संकल्प काम करता है। आजकल सब Uncalled for Children बिन बुलाई संतान पैदा हो रही है। केवल बच्चे के लिए स्त्री के पास कौन जाता है ? सब अपने विषय

के लिए जाते हैं। फिर इनसे तुम यह आशा रखो कि वह संतान लायक बनेगी, तुम्हारे या देश के लिए लाभदायक होगी, यह बिल्कुल झूठ है। हो ही नहीं सकता। इसलिए मेरी यह शिक्षा है कि अच्छी सन्तान पैदा करो। आजकल हम लोगों ने स्त्रियों को विषय विकार का एक खिलौना समझा हुआ है। यह महान् मूर्खता है। यह मातायें देश के बनाने वाली हैं। हिन्दुओं में देखो। जब तक कंवारी लड़की होती है तो हम उसे दुर्गा समझकर पूजते हैं। कोई बाप या बड़ा भाई अपनी लड़की से हुक्का तक नहीं भरवाता। मेरा बाप लड़कियों की पकाई हुई रोटी नहीं खाता था। क्यों ? उनका मान था। जब ब्याही होती है तो लक्ष्मी हो जाती है। तुम अपने जीवन की आप कदर करना सीखो। तुम नेक संतान पैदा करके संसार को बदल सकती हो। इस वास्ते जहां मैं परमार्थ की शिक्षा देता हूं वहां संसार का व्यवहार बताता हूं ताकि संसार में सुखी रहो। जो संसार में ही सुखी नहीं है वह मरने के बाद कहां से सुखी होगा। सबसे बुरी बात हमारे दुख का कारण हमारे काम का अंग है। अधिकतर इसके दोषी हम आप

हैं अगर हमारी संतान नायालक है तो मैं समझता हूं कि हम नालायक रहे हैं ।

अगर ये धार्मिक संसार के आदमी ऐसी शिक्षा दें तो संसार का बहुत भला हो सकता है ।

सब को राधास्वामी

मानवता की किरणें

(किस्त १)

लेखक :-श्री शिव नन्दन भारद्वाज एम-ए

प्रिन्सीपल(रीटार्ड)प्रधान मानवता मन्दिर होशियारपुर

हमारा समाज मानवता रूपी सूरज से जीवन-शक्ति व प्रकाश पाकर ही सुव्यवस्थित रह सकता है व प्रफुल्लित हो सकता है।

मानवता रूपी सूरज की अनेक किरणें हैं। एक महान किरण का नाम सच्चिदानन्द, सत् चित् आनन्द, है। आइये इसके प्रकाश से लाभ उठावें व इस का आनन्द लेवें।

(क) मानवता की पहली मांग है सत्, अर्थात हम अपनी सत्ता, हस्ती, कायम रखें व दूसरों को भी अपनी २ सत्ता कायम रखने दें। अर्थात जियें और जीने दें। हम में जितनी ही इस की अमली कमी है, उतने ही हम दुःखी हैं।

(ख) चित् अर्थात चेतना, ज्ञान। यथार्थ ज्ञान जितना हम अधिक प्राप्त करेंगे व बांटेंगे उतना ही सुखी हो सकेंगे। यथार्थ ज्ञान यही सिखाता है कि सारी मानव जाति एक परिवार है। एक ही परमतत्व इस का आधार है, अतः सभी अपने हैं, अपने जैसे हैं, कोई भी गैर नहीं है, पराया नहीं है। सभी हमारे प्रेम के योग्य अपने जैसी आत्मायें हैं, यद्यपि शरीर व आकार भिन्न हैं।

(ग) आनन्द सबकी उत्पत्ति आनन्द से है। सभी आनन्द की इच्छा करते हैं। अतः हमें चाहिए कि सभी की खुशी बढ़ाने का प्रयत्न करते रहें व उसके बाद आशा रखें कि वह भी हमारे प्रति ऐसा ही करेंगे।

सच्चिदानंद, जो कि परम तत्व का स्वरूप कहा जाता है, उस की प्राप्ति के लिये उपरोक्त बातें आवश्यक प्रतीत होती हैं। मनुष्य की रूह की स्वाभाविक मांग है जीना, जानना व खुश रहना, इस की पूर्ति का अधिकार हरेक व्यक्ति को है अतः हम ऐसे ढंग से जीवन बितायें कि परस्पर एक दूसरे के सहायक बनें इस कार्य में, जो अपने प्रतिकूल

लगे वह दूसरों के प्रति व्यवहार न करें। यही मानवता है। और मानवता ही जगत कल्याण का मूल मंत्र है।

कुल के लिये जीना, ऊन्ध स्वार्थ से बचना, फिरकाबाजी का परित्याग, यथार्थ ज्ञान के प्रकाश में जागना व जीना, मनुष्य जाति को काल राज्य में बसते हुए भी अकाल पद के साथ जुड़े रहने का आनन्द प्रदान कर सकता है। यही कला हजूर परम दयाल परम संत फकीर चन्द जी महाराज अपने अमली जीवन द्वारा सिखाकर जगत कल्याण कार्य कर रहे हैं। भाग्यशाली हैं वह लोग जो उनके उपदेश से लाभ उठा रहे हैं ॥

इसकी खवर मुतलिक नहीं

लेखक :-श्री मेजर वृज लाल साहिव
गांव लठयाणी, जि: ऊना
हिमाचल प्रदेश

1. दौड़ा-दौड़ा भागता था सग पागल की तरह
चाखता फिर थूकता था आवे गागिल की तरह
बे वजह ही उछलता था औरी छागल की तरह
किस की खातिर क्या वो शै थी इसकी खबर मुतलिक नहीं

2. मंदिरों में क्या छुपा था क्या था गंगा धार में
गारो गुफा में क्या घुसा था क्या था दश्तो पहाड़ में
किसकी खातिर दुख उठाए क्या था आहो ज़ार में
क्या बताऊं दोस्तो इसकी खवर मुतलिक नहीं

3. कान फाड़े केस धारे खाक मल कर क्या मिला
अग्नि में जल कर क्या मिला बर्फों में गल कर क्या मिला
जग सुखों को छोड़ कर दुनियां से टल कर क्या मिला
मासूक का दर कौन था इसकी खवर मुतलिक नहीं

4. गीता पुराण और भागवत रामायण पढ़ कर क्या मिला
अन्जील और कुरान की आयतें हिफज कर क्या मिला
पाठों में डट कर क्या मिला गुरुवाणी रट कर क्या मिला
था कुतुब खानी में क्या इसकी खबर मुतलिक नहीं

5. कई ओ३म् सोहम जप गए कई मौणी बन कर चुप रहे
कई ध्यान धर-धर थक गए कई योग आसन जुट रहे
कई प्राण वायु रुक रहे कई पेट को हैं घुट रहे
इनसे उसे क्या वासता इसकी खबर मुतलिक नहीं

6. करता तलाशे यार को खुद चार में है सो रहा
रोता है जिसके हिजर में हर सू वह सन मुख हो रहा
पानी में प्यासा रो रहा अपने में आप ही खो रहा
नुक्ता का ही तो राज है इसकी खबर मुतलिक नहीं

7. हर जीव में जिससे ज़िन्दगी हर शै में जिससे हुसन है
दौरे जमा जिस से रवां तारों का जिससे जसन है
हर रुप रंग हर किस्म है हर जान है हर जिस्म है
वह दिलवर सदा अंग संग है इसकी खबर मुतलिक नहीं

नकल पत्र जोकि भारत सरकार को उनके पत्र के उत्तर में लिखा गया।

श्रीमान जी,

आप का प्रेस आयोग बारे पत्र मिला। उत्तर में निवेदन है कि हमारा फकीर लायब्रेरी चैरीटेबल ट्रस्ट, होशियारपुर हजूर परम दयाल फकीर चन्द जी महाराज की सरंक्षता में जनता की भलाई के लिये काम करता है जो कि निम्नलिखित हैं,

१. सत्संग द्वारा शिक्षा देकर लोगों के विचारों में सुधार लाना अर्थात कल्याणकारी बनाना।

२. शारीरिक रोगियों के इलाज की व्यवस्था, जिस के लिये तीन हस्पताल चल रहे हैं।

३. मानव मन्दिर मासिक पत्रिका (हिन्दी) व अन्य साहित्य (हिन्दी, अंग्रेज़ी, उर्दू, पंजाबी) द्वारा

परम दयाल जी महाराज के विचारों का प्रकाशन जो कि बिना मूल्य बांटा जाता है।

उप्रोक्त सब कामों का उद्देश्य जन साधारण में मानवता लाना है अर्थात परस्पर घृणा, द्वेष, मत्सर त्याग कर प्रेम सहानुभूति सहित मिल जुल कर जीने की भावना उत्पन्न करना है। मानव के विचारों में बड़ी भारी शक्ति है, हमारे अन्तर से जिस प्रकार के विचार निकलते हैं वही सामूहिक रूप में देश व मानव जाति के कर्म बन जाते हैं और उनका फल भोगना अनिवार्य है।

आप के प्रश्नों का निष्कर्ष निकालते हुए हम यह सुझाव अवश्य देंगे कि विचारों के प्रकाशन और व्यक्त करने में स्वतन्त्रता उसी सीमा तक होनी चाहिये जहां तक लोगों में एक दूसरे के विरुद्ध बुरी भावनायें उत्पन्न न हों। देश में शान्ति का राज्य बना रहे।

दूसरे, जिस ईश्वर, परमात्मा, मालिक के नाम पर अनेक प्रकार के धर्म, पंथ, सम्प्रदाय बन गये और आपस में झगड़ा करते हैं, वह तो बेअन्त, निर्विकार, अनाम, अकाल पुरुष और परम तत्व

आधार है। उस का पता किसीको नहीं लगा। जो ढूंढने गया आप ही गुम हो गया। इसलिए परम दयाल जी महाराज अपने सत्संगों में बताते हैं कि "जियो और जीने दो" के नियम पर चलते हुए सब की भावनाओं का सत्कार करो। धर्म और पंथ प्रत्येक का व्यक्तिगत है। अपने धर्म का अनुकरण करो मगर दूसरों के धर्म में दखल मत दो।

हमारी ओर से आप के सब प्रश्नों का यही उत्तर है।

आशा है आप क्षमा करेंगे।

प्रकाशक

मानव मन्दिर

मानवता मन्दिर

होशियारपुर।

मेरी करबद्ध प्रार्थना

भारत वासियो ! बचपन से किसी चीज़ की तलाश थी जिस को मैं मालिक या राम समझता था, एक दृश्य द्वारा सन् १९०५ ईशवी में हज़ूर दाता दयाल महर्षि शिव व्रत लाल जी महाराज के चरणों में ले गई। उन्होंने सन्तमत दिया। इस सन्तमत के समझने में या जिस चीज की तलाश थी उसको पावे में बानवे साल का हो गया। अब वह चीज क्या निकली ? वह एक अवस्था है जहाँ मैं अपनी हस्ती को, हैपने को, भूल जाता हूं, जो बाकी रह जाता है उस को ब्यान करने के लिये शब्द नहीं मिलते। बस यह मिला मुझे।

क्योंकि हज़ूर दाता दयाल जी महाराज नें मेरे जिम्मे निबल, अबल, अज्ञानी जीवों की सहायता, जगत कल्याण और साथ ही जीवों को भव सागर से पार करने का काम लगाया था। जिसे आज अड़तीस साल से करता हुआ चला आ रहा हूं, मैंने जो काम किया यह मेरे निज अनुभव के आधार पर है अथवा आप बीती को सामने रखते हुए किया।

गुरु आज्ञा का पालन करने के सिलसिले में मैंने मानवता मन्दिर की नींव रखी। जो कुछ मैंने कहा वह पुस्तकों अथवा मानव मन्दिर पत्रिका के रूप में आज कल प्रकाशित होता है। ब्राह्मण होने के नाते जो प्रकाशन मन्दिर से होता है उसका मूल्य नहीं रखा क्योंकि ब्राह्मण के लिये वेद बेचना पाप है, वेद नाम है ज्ञान का। पुस्तकें बड़ी होती हैं और दिन प्रति दिन मांग बढ़ रही है। इसलिये मैं हाथ बांध कर कहूंगा कि जिन सज्जनों को मेरे अनुभव से सहमति न हो, यूंहि किताबें मंगवाकर, क्योंकि यह मुफ्त मिलती हैं, मन्दिर की हानी न करें।

अब किताबें अंग्रेजी और पंजाबी भाषा में भी मिलती हैं जो कि निम्नलिखित हैं।

ਪੰਜਾਬੀ ਕਤਾਬਾਂ ਦੀ ਸੂਚੀ

1. ਪੰਜ ਨਾਮ ਦੀ ਵਿਗਿਆਨਕ ਵਿਆਖਿਆ, 2. ਅਨੁਭਵ ਦਾ ਨਿਚੋੜ ਮਾਨਵਤਾ। 3. ਸਚਾਈ ਦਾ ਨਿਚੋੜ। 4. ਮਾਨਵਤਾ। 5. ਮਾਨਵ ਕਲਿਆਣ। 6. ਸੱਚਾ ਧਰਮ ਮਾਨਵਤਾ। 7. ਸੱਚਾ ਸਨਾਤਨ ਧਰਮ ਅਥਵਾ ਸੱਚਾ ਮਾਨਵ ਧਰਮ।

अंग्रेजी भाषा में साहित्य

1. A Word to Americans
2. A word to Conadians
3. Manavta the true religion
4. Religious Research
5. Weight of Soul
6. Truth Always Wins
7. Essence of Truth
8. Science of God Realization
9. True Sanatan Dharama or True Religion of Humanity
10. Jeewan Mukti

जिन को जरूरत हो वह मंगवा सकते हैं हम बिना मूल्य भेज देंगे। मगर यह मुफ्त का काम कब तक चलेगा ? इसलिये जो सज्जन यह समझते हैं कि जो कुछ मैंने इन किताबों में लिखा है इस में कुछ सच्चाई है, इस पर आचरण करने से इन्सान का पारिवारिक, समाजिक और आत्मिक जीवन सुधर कर निर्वाण को प्राप्त हो सकता है तो यथा शक्ति मन्दिर की सहायता करें ताकि यह सब काम जारी रखा जा सके।

सरकार के आयकर के नियमानुसार ट्रस्ट वालों को साल में जितनी आय अथवा दान आता है वह उसी

साल में खर्च करना पड़ता है इसलिये मैंने जनता, विशेष कर गरीब रोगियों के इलाज में सहायता करने के लिये तीन हस्पताल एलोपैथिक, डेन्टल व होमियोपैथिक खोले हुए हैं मगर मुसीबत यह है कि बजाय गरीबों के अमीर आदमी अधिकतर इलाज कराने के लिये आते हैं। इसलिये अगर कोई सज्जन इस काम में सहायता करना चाहता है तो करे मगर यह विनती अवश्य करूंगा कि जो धनी लोग हैं वह यहां हस्पताल से मुफ्त दवाई न लें।

भारत वासियो! मैंने जो कुछ किया निज स्वार्थ या संतमत के पक्ष में इसे सच्चा सिद्ध करने लिये नहीं किया। मालिक के मिलने की तलाश थी जिस को हम ईश्वर परमेश्वर समझते थे। मेरा भाग्य अथवा दुर्भाग्य इस संतमत या राधास्वामी मत में ले आया। यहां इन संतों ने तमाम धर्मों, वेदान्त या सूफीमत तक का भी खण्डन किया हुआ है। आत्मा खण्डन सहन नहीं कर सकती थी इसलिये प्रण किया था अपना अनुभव कह जाऊंगा। दाता दयाल जी महाराज ने काम दिया था। तुम ही सोचो, राधास्वामीमत वालों की किताबों में संतों की इतनी

बड़ाई लिखी हुई है कि वह ईश्वर परमेश्वर के पैदा करने वाले हैं, बस, इसी एक राज़ को जानने के लिये मैंने अपना जीवन खो दिया कि संतमत वालों के पास क्या चीज़ है जो ईश्वर और परमेश्वर के भी पैदा करने वाले समझते हैं। दाता दयाल जी महाराज पर मेरा विश्वास तो नहीं टूटा मगर बानी भेद नहीं देती थी। इसलिये प्रण किया था कि जो समझ में आयेगा बता जाऊंगा और दाता जी ने कहा था कि शिक्षा बदल जाना। हज़ूर बाबा सावनसिंह जी महाराज ने भी हुक्म दिया था कि निर्भय होकर काम कर जाना, सो कर चला, मेरा निज अनुभव मानता है कि संत बनना कोई सरल काम नहीं है। मुझ पर समय समय पर संतपने की हालत तारी होती है, चोबीस घण्टे नहीं। अब यह प्रार्थना है कि यह संसार मेरे लिये सदा के लिये लोप हो जाये और अपनी हस्ती खोकर ज़ात में समा जाऊं मगर यह उसकी इच्छा है।

फकीर

Regd. No. 26265/74 MARCH 10th 1979
MANAV MANDIR NW—HSP—7.

ADDRESS

To

1283 Sh. A. Hanmanth Rao
H.No. 10-3-194/8
Hamayun Nagar, Hyderabad
28 A.P. 500028

From :

MANAVTA MANDIR
SUTEHRI ROAD,
HOSHIARPUR.
Phone : 2022